Digamber Jain—Surat. Regd. No. B-744.

दिगंबर जैन

वीर सं० २४४९ श्रावण। विक्रम १९७९.

संपादक—
मूलचंद किसनदास कापड़िया—सूरत।

वर्ष १६ वां अंक १०वां ई. सन् १९२३

विषयानुक्रमणिका।

नं०	विषय	पृष्ठ
१	संपादकीय वक्तव्य	१
२	दशलाक्षणी पर्वका कर्तव्य (विद्यानंद शेरसिंह)....	५
३	भ० सुरेन्द्रकीर्तिजीने खुल्लो पत्र (सैया)	६
४	जैन समाचार संग्रह	७
५	सूचीपत्र शास्त्रभंडार नृसिंहपुरा दि० जैन मंदिर—सूरत	९
६	महिलाओंका कर्तव्य (ला० कामताप्रसाद जैन)	२२
७	सम्पादकके लक्षण (पं० देवेंद्रकुमार गोधा)	२५
८	धार्मिक मनुष्यनां गुणो (मोहनलाल मथुरदास शाह)	२९
९	प्रेम (पं० गोरेलाल पंचरत्न, जवेरा)....	३०
१०	करमसदके प्राचीन दर्शनीय ग्रन्थ	३२
११	आरोग्य शिक्षा	३२

SHREE JAIN LIBRARY No. SIROHI STATE 19

पेशगी वार्षिक मूल्य रु० १-१२-० पोस्टेज सहित।

“ दिगम्बर जैन ” के तीन उपहारग्रन्थकी

वी० पी० होरही हैं।

दिगम्बर जैन (वर्ष १४ व १५वाँ) वीर सं० २४४७ व २४४८ अर्थात् सं० १९७७-७८ का वार्षिक मूल्य करीब २ सभी ग्राहकोंसे वसूल आनेका है और इन दो वर्षोंके तीन उपहार ग्रन्थ—

१. **श्रावक प्रतिक्रमण** (विधि, अर्थ सहित)

२. **बालबोध जैनधर्म** (चतुर्थ भाग)

३. **जैन इतिहास** प्रथम भाग (प्रथम १२ तीर्थंकरोंका चरित्र)

तैयार हैं और दो वर्षोंका मूल्य वसूल करनेके लिये रु० ३॥=)की वी० पी० से भेजे जारहे हैं। आशा है सभी ग्राहक वी० पी० आते ही मनीऑर्डर चार्ज =) सहित ३॥) देकर तुर्त छुड़ा लेवेंगे।

जब इन दो वर्षोंके सभी अंक आपको मिल चुके हैं तब आपका प्रथम कर्तव्य है कि वी० पी० अवश्य छुड़ा लेवें। इन पीछले दो वर्षोंका मूल्य देरसे वसूल करनेमें हमारा ही प्रमाद कारणरूप है।

वर्तमान १६ वें वर्षमें भी एक ग्रन्थ उपहारमें दिया जायगा जो तैयार होनेपर इस वर्षका मूल्य भी वसूल किया जायगा। जिन २ ग्राहकोंका मूल्य आगया है उनको ये ग्रन्थ बुकपेकेटसे भेजे जांयगे।

किसी ग्राहकको हिसाबमें कुछ भूल मालुम हो तौ भी वे वी० पी० वापिस न करें। जो कुछ भूल होगी, दूसरे वर्षके मूल्यमें समन ली जायगी।

मैनेजर, दिगम्बर जैन-सूरत।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधश्च तत्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्ततास्, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष १६ वाँ. ‖ वीर संवत् २४४९. श्रावण वि० सं० १९७९. ‖ अंक १० वाँ.

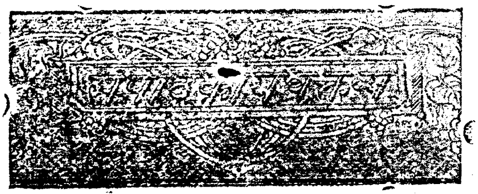

ला० जम्बूप्रसादजीका वियोग।

जैसे स्वर्गीय दानवीर सेठ माणिकचंदजी सारे जैन समाजमें दानी व तीर्थभक्त प्रसिद्ध होगये उसी प्रकार सहारनपुर निवासी बड़े जमींदार, श्रीमान्, धर्मात्मा, दानी, कोटयाधीश व तीर्थभक्त लाला जम्बूप्रसादजी रईसका नाम भी सारे जैनसमाजमें बच्चा २ जानता है। आपमें धर्मभक्ति व तीर्थभक्ति कूट२ भरी थी व एक कोटयाधीश होनेपर भी आप रातदिन धर्मक्रिया तथा तीर्थरक्षाके कार्योंमें तल्लीन रहते थे परन्तु यह कौन जानता था कि आप केवल ४३ वर्षकी आयुमें अकस्मात् ही जैन समाजसे चल बसेंगे? आप दोएक माससे कुछ बीमार थे और उसका दुखद परिणाम यही आया कि आप श्रावण वदी १३ ता० १०-८-२३को इस असार संसारसे असमयमें ही सदाके लिये चल बसे जिसका सारे दि० जैन समाजको अपार दुःख होरहा है। लालाजी धर्मके व तीर्थरक्षाके प्राण रूप थे। यह कहनेमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है क्योंकि आपकी धर्मक्रिया एक त्यागीसे भी बढ़कर थी अर्थात् दिनके १२ घंटोंमें करीब ६-७ घंटे तो धर्म ध्यान, पूजा पाठ, स्वाध्याय आदिमें बिताते थे व तीर्थरक्षाके लिये आपने तन मन व धनका कितना समर्पण किया था वह सारे जैनसमाजसे विदित है। हम तो यही कहते हैं कि पूज्य तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी आदि सभी तीर्थ जहां२ हमारे श्वे० बन्धुओं द्वारा झगड़ा चल रहे हैं उनमें दि० जैन समाजकी तरफसे प्रथम खड़े रहनेवाले अगुए आप ही थे व कोर्टमें केसोंमें आपका ही प्रथम नाम चल रहा है। शिखरजी की रक्षाके लिये कईबार आपने पचास २ हजार रु०का दान कर दिया था व जब चाहें रुपयोंकी भी मदद देते रहते थे। आपका स्वभाव भी सीधासाधा व हसमुखा था व आपका प्रभाव सरकारी आफिसरों पर बहुत पड़ता था।

विद्यादानमें भी आप कम न थे। आपने कई वर्षोंतक महाविद्यालय मथुराका कुल घाटा अपनी जेबसे दिया था। हम समझते हैं आपका वियोग जैन समाजमें इतना असह्य हुआ है कि जिसकी पूर्ति होना

कठिन व असंभव है। तीर्थक्षेत्र कमेटीके महामंत्रीजी आप व लाला देवीसहायजी फिरोजपुरसे कई तीर्थोंके केसोंके लिये निश्चिंत थे इसलिये आपके वियोगसे तीर्थक्षेत्र कमेटीके सभी कामोंमें बड़ा भारी धक्का लगा है। जैसे स्वर्गीय दानवीर सेठ माणिकचंदजीका नाम बच्चा बच्चाको याद रहेगा इसी प्रकार लाला जम्बूप्रसादजीका नाम भी सदा चिरस्मरणीय रहेगा। हमारी महद् इच्छा है कि आपका चित्र व बृहत् जीवनचरित्र प्रकट हो और इसके लिये इनके इकलौते सुपुत्र श्रीमान प्रद्युम्न कुमारजीको हम निवेदन करते हैं कि आप हमारी इस ईच्छाको पूर्ण करनेके लिये अपने धर्मवत्सल दानी-पूज्य पिताजीका चित्र व परिचय हमें तैयार करवाकर भेजनेकी कृपा करें कि जिसको हम 'दिगंबर जैन'के पाठकोंकी सेवामें प्रकट कर सकें। आपकी दान-सूची व धर्मकार्य साधारण नहीं है इसलिये वे प्रकट होनेकी आवश्यकता है। अन्तमें हम पूज्य लाला जम्बूप्रसादजीकी आत्माको शांति चाहते हैं व आपके कुटुम्बियोंको धैर्य प्राप्त हो यही हमारी भावना है तथा हमें पूर्ण आशा है कि आपके सुपुत्र प्रद्युम्नकुमारजी अपने पूज्य पिताजीके कार्योंको अवश्य संभाल लेंगे व पिताजीके मार्गका ही अनुसरण करेंगे।

* * *

दूसरा वियोग। लाला जम्बूप्रसादजीके वियोगके बाद ही दूसरा वियोग सोलापुर निवासी वयोवृद्ध दानी देशभक्त व धर्मात्मा सेठ सखाराम नेमचंद दोशीका गत श्रावण सुदी १० को हुआ है यह भी दुःखदायी है। सेठ सखारामजी हमारे पूज्य नेता सेठ हीराचंद नेमचंदजीके बड़े भ्राता व बम्बई परीक्षालयके महामंत्री सेठ रावजीभाईके पूज्य पिताजी थे। आपकी आयु करीब ७० वर्षकी थी। आपमें धर्म व देशप्रेम अपार था। वर्षोंसे आपको स्वदेशी कपड़े वापरनेकी प्रतिज्ञा थी व स्वदेशी कपड़ेका ही व्यापार करते थे। आपके नामसे कई वर्षोंसे एक औषधालय सोलापुरमें चल रहा है। अंत समयमें आप २८१००) का दान इस प्रकार कर गये हैं—२००००) सखाराम नेमचंद औषधालय सोलापुर, ५०००) ऐलक पन्नालाल जैन पाठशाला सोलापुर, ५००) सोलापुर पांजरापोल, १०००) कंकुब्हेनको, २००) कुंथलगिरि आश्रम, ८००) सोलापुर मंदिर, व १५००) फुटकर। हमारी यह महद् इच्छा है कि सेठ सखारामजीके स्मरणमें शास्त्रदानकी भी कोई व्यवस्था सेठ रावजीभाई करेंगे तो बहुत ही उपयुक्त होगा। अंतमें आपकी आत्माको शांति व कुटुम्बको धैर्य प्राप्त हो यही हमारी भावना है।

* * *

सोलह कारण पर्व। हमारे सभी धार्मिक पर्व वर्षमें तीन दफे आते हैं परन्तु वर्षाऋतुमें ही सभी पर्व अच्छी तरहसे पालन होते हैं उसका खास कारण यह भी है कि वर्षाऋतुमें पृथ्वी जलमग्न होनेसे त्यागीगण एक ही स्थानपर निवास करते हैं इससे धर्मलाभ विशेष होता है व गृहस्थीको भी व्यापारसे अवकाश रहता है।

हमारा सोलहकारण पर्व श्रावण सुदी १५ से प्रारम्भ हुआ है व आश्विन वदी १ मंगलवारको पूर्ण होगा। अब इस पर्वमें हमारे सभी मंदिरोंमें नित्य पंच पूजा, तत्त्वार्थ-सहस्रनाम पाठ, अभिषेक व सोलह कारण पूजा होती है परन्तु सोलह कारण भावनाका स्वरूप तथा तत्त्वार्थ-सहस्रनामके अर्थ तो प्रायः सभी मंदिरोंमें नहीं सुनाया जाता इससे पाठ व पूजाका सच्चा रहस्य श्रावकोंके समझनेमें नहीं आता इसलिये सभी मंदिरोंमें यह जरूरी कार्य होनेकी आवश्यकता है अर्थात् एक माहतक नित्य मंदिरमें तत्त्वार्थके अर्थ होने चाहिये व सोलह कारण धर्मकी १६ भावनाओंका स्वरूप जो रत्नकरंड श्रावकाचारादिमें है सबको पढ़कर सुनाना चाहिये। हमने "सोलहकारण धर्म" नामक पुस्तक भी इसी लिये तैयार करवाके प्रकट की है उसका भी कमसेकम नित्य पठन पाठन होना चाहिये। आशा है हमारे हरएक पाठक इस सोलह कारण पर्वमें नित्य सोलह भावनोंका पठनपाठन अवश्य करेंगे।

* * *

भंडारोंके द्रव्यका उपयोग। हमारे अनेक मंदिरोंमें हजारोंका द्रव्य है, परंतु उनका उपयोग न होकर वह ऐसा ही पड़ा रहता है और तो उनके सूद तकका भी उपयोग नहीं होता। मंदिरोंमें लोग जो द्रव्य देते हैं वह धर्मकार्यके लिये देते हैं न कि भंडारोंमें रख छोड़नेके लिये। हमारे कितने ही मंदिर ऐसे हैं जहां हजारोंकी सिलक होते हुए भी सौ दोसी भी शास्त्र नहीं हैं यह कितनी खेदजनक बात है। मंदिरोंमें प्रतिमाजी व शास्त्र इन दोनोंकी खास आवश्यक्ता है उनमें प्रतिमाजी होती ही तो हैं परंतु शास्त्र कुछ होते हैं तो वे अव्यवस्थित। यह कहां तक ठीक है? हमारे विचारसे हरएक मंदिरमें सभी शास्त्रोंकी एक २ प्रति अवश्य होनी चाहिये। छपे हुए सुलभतासे मिल सकते हैं व न छपे हों वे होसके तो लिखवाकर रखने चाहिये। स्वर्गीय दानवीर सेठ माणकचंदजीकी स्मृतिमें एक संस्कृत सुलभ ग्रन्थमाला निकल रही है उसके प्रकट हुए २४ शास्त्र तो अवश्य मंगाकर शास्त्रभंडारमें विराजमान करने चाहिये। हमने इसवार हमारे सभी छपे हुए शास्त्रोंका एक बड़ा सूचीपत्र तैयार करके हमारे पाठकोंको इस अंकके साथ वितरण किया है उसको हरएक पाठक सभाल लेवें व अपने जिन २ मंदिरोंमें जो २ शास्त्र न हों मगा लेनेका प्रबन्ध करना चाहिये। अपने निजी द्रव्यसे नहीं तो मंदिरके भंडारके द्रव्यसे तो सभी शास्त्र अवश्य मंगाकर संग्रह करने चाहिये।

* * *

तीर्थरक्षा फंड। सारे हिंदुस्थानमें हमारे तीर्थक्षेत्र, सिद्धक्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, प्राचीन जैन स्मारक व मंदिर अनेक हैं जिनकी रक्षा करते रहनेके लिये हमारे स्वर्गीय दानवीर सेठ माणिकचंद्रजी बम्बईमें हीराबागमें भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी स्थापित कर गये हैं (जो सरकारमें रजिष्ट्री की गई है) परन्तु इसमें कोई स्थायी फंड न होनेसे चालू

सहायतासे ही करीब २०-१२ वर्षसे काम चल रहा है। श्री शिखरजी, अंतरीक्षजी, मक्सीजी आदि तीर्थोंकी रक्षाके झगड़ोंमें आज तक जो कार्य इस तीर्थक्षेत्र कमेटीने कर दिखाया है वह अतीव प्रशंसनीय है। परन्तु यह कार्य चालू होनेसे रुपयोंकी नित्य आवश्यकता रहती है इसलिये ४-५ वर्ष हुए इस कमेटीने ऐसा उचित व सुलभ प्रस्ताव किया है कि **प्रतिवर्ष हरएक दि० जैन गृहवाले सिर्फ एक२ रुपया तीर्थरक्षा फंडमें देवें** परन्तु इस प्रस्तावकी अमली कार्रवाई बहुत ही कम होती है। गत वर्ष इस फंडमें बहुत ही कम आय हुई थी यह ठीक नहीं है। वर्षभरमें सारे कुटुम्बके पीछे तीर्थरक्षाके लिये केवल एक रुपया देना कुछ भी कठिन नहीं है इसलिये इन रुपयों की उगाई दशलाक्षणी पर्वमें करके रुपयोंकी रकम तीर्थक्षेत्र कमेटीको भेज देनी चाहिये। हरएक शहरमें एक २ भाई स्वयंसेवक होकर यह कार्य करेंगे तो सहजमें यह कार्य हो सकेगा। कमसे कम अनंत चतुर्दशीके दिन ही उन स्वयंसेवकको घर २ जाकर या मंदिरमें आये हुएसे तीर्थरक्षा फंडका रुपया इकट्ठा कर लेना ठीक होगा।

* * *

बाल-मरणमें स्तुत्य दान।

अभी दक्षिण प्रान्तमें जो एक बाल मरण व स्तुत्य दान हुआ है वह चिरकाल तक याद रहेगा। इस मरण व दानकी कथा इस प्रकार है-सांगली (बेलगाम) निवासी एक प्रसिद्ध धनिक व्यापारी सेठ सावंतप्पा भाऊ मारवाडे हैं। उनके एक ही पुत्र श्रीकुमार था। आयु १६वर्ष व सांगली जैन बोर्डिंगमें ५ वें दर्जेमें पढ़ता था। यह कुमार अकस्मात् ज्वरसे पीड़ित होगया व जब इस कुमारने जान लिया कि मेरी मृत्यु निश्चित है तब इसने पं. रामचंद्र दादाके उपदेशसे **समाधिमरण**की विधि धारण की व शरीरके सब वस्त्रोंका भी त्याग कर दिया और णमोकार मंत्रका जप करने लगा। दानके लिये उसके पिताने आकर १००)लाकर रक्खे उसीको देखकर कुमार चूप रह गया व बादमें पितासे कहा-मैं तो मरनेवाला हूं। क्या मेरी इच्छा पूर्ण करेंगे? पिताने कहा-जो तेरी इच्छा हो सो कह। कुमारने कहा-मेरे पीछे धर्मोन्नतिके लिये २००००) निकालना चाहिये। पिताने तुर्त स्वीकार किया। तब पासवाले लोगोंने कहा क्या इस रकमसे नया मंदिर बंधाया जायगा तब उस धर्मप्रेमी कुमारने अपने पिताको बुलाकर कहा-पिताजी, इस रकमको इस प्रकार खर्च करना-५०००) जैन बोर्डिंगमें व १५०००) से जैन धर्मके ग्रन्थ प्रसिद्ध करो व जैन विद्यार्थियोंको छात्रवृत्ति देना जिससे जैनधर्मकी उन्नति हो। किसीने आग्रह किया कि इनमेंसे ५०००) तो श्री सम्मेदशिखरजी क्षेत्रके लिये दान कर। तब अपनी इच्छा न होते हुए भी कुमारने १५०००) मेंसे ५०००) शिखरजीके लिये स्वीकार किये व यह पुण्यात्मा जीव ता० ४-८-१३की रात्रिको ११॥ बजे इस संसारसे चल बसा। यह मृत्यु व दान कितना अनुकरणीय हुआ है उसको हमारे पाठक अच्छी तरहसे जान जायंगे व समय आनेपर इसका ही अनुकरण करेंगे ऐसी हमारी भावना है।

आगामी वीर निर्वाण संवत २४२०के प्रारंभ में भी प्रतिवर्षकी

सचित्र खास अंक ।

भांति हमारा विचार 'दिगम्बर जैन'का सचित्र खास अंक प्रकट करनेका निश्चित रूपसे है इसलिये हमारे सुज्ञ लेखकोंको हम अभीसे आमंत्रण करते हैं कि वे हिंदी, संस्कृत, गुजराती, मराठी व अंग्रेजी भाषाके उपयोगी लेख शीघ्र ही तैयार करके भेजें व कोई भाई अप्रकट प्राचीन तीर्थोंके, संस्थाओंके व प्रसिद्ध दानी धर्मात्माओंके चित्र व परिचय भेजेंगे तो उनको भी सहर्ष स्थान दिया जायगा। इस वर्ष भी करीब १००-१२५ पृष्ठका खास अंक निकालनेका हमारा इरादा है। आशा है हमारे लेखकगण व ग्राहकगण हमें इस कार्यमें अवश्य सहायक होंगे।

दाहोद—की पाठशालाके १०१) हेमचन्द बापुजी, ५१) बोवड़ा परथीराज मंगलजीत व ११) तलाटी भोजराजजीने दिये हैं। यहां पं० दीपचंदजी वर्णी इस चातुर्मासमें भी पधारे हैं और आपकी प्रधानतामें दाहोदमें जैन बोर्डिंग निकालनेके लिये एक डेप्युटेशन गुजरातमें भ्रमण करेगा। दाहोद मालवा व गुजरातका मध्य बिन्दु है।

गोमट्टस्वामी मस्ताभिषेक—श्री श्रवण बेलगोलामें आगामी फाल्गुन मासमें श्री गोमट्टस्वामीका महा मस्तकभिषेक १९ वर्षके बाद होगा। खर्चके लिये तीर्थक्षेत्र कमेटीसे १००००)की मंजुरी दीगई है। इस समय वहां कई सभाएँ व प्रदर्शिनी भी होगी।

दशलाक्षिणी पर्वमें हमारा कर्तव्य।

प्रिय भारतीय जैनी भाइयो! आपको विदित है कि **दशलाक्षिणी पर्व** हमारा कितना उत्तम पर्व है। इससे बढ़कर हमारा पर्व नहीं है अतएव इन पर्वोंमें कमसे कम भाइयोंको देवपूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप, दान यह छैकर्म (जो श्रावकोंके लिये प्रति दिन पालन करनेके हैं) अवश्य करने चाहिये। इन षट्कर्मोंमें दान मुख्य है। चूंकि ५ कर्मोंसे तो अपना भला होता है और दान तो दूसरोंके भलोंके लिये रक्खा गया है।

यह तो आपको विदित है कि दानीका पद कितना बड़ा है। कोई उर्दूका कवि कहता है—

अगर मंजूर धन रक्षा,
तो धनवानों! बनो दानी।
कुवेसे जल न निकलेगा,
तो सड़ जायगा सब पानी॥
दिया जल हमको बादलने,
तो बादल होगया ऊंचा।
रहा नीचा ही सागर है,
अदाताको पशेमानी॥
कोई देता धन जीकर,
कोई मरकर देता है।
जरासे फेरसे बन जाते,
हैं-ज्ञानीसे अज्ञानी॥

आपको इस कवितासे विदित होगया होगा कि दानीका पद कितना ऊंचा होता है। दान देनेवालेका हाथ हमेशा ऊंचा होता है।

मुनिश्वर जो दान लेते हैं उनका हाथ नीचा होता है और देनेवालेका ऊंचा होता है। जो दान देते हैं। उन्हें हमेशा दानवीर इत्यादि कहकर पुकारते हैं। दानी बादलोंकी तरह स्वच्छताको प्राप्त होते हैं जैसे-जब बादल जल भरकर लाते हैं और वह जल नहीं देते, काले रहते हैं लेकिन जब वह जल छोड़ देते हैं, स्वच्छताको प्राप्त हो जाते हैं। बादल जो प्राणियोंको जल देते हैं उनका जल शीतल और मिष्ट होता है और समुद्र जो जोड़ता है उसका जल खारा होता है, कोई भी नहीं पीता।

इन सब बातोंसे आपको मालूम होगया होगा कि दानीकी पदवीके बराबर किसीकी ऊंची पदवी नहीं। आदीश्वर भगवानको राजा श्रेयांशने दान दिया तो वह देवों और चक्रवर्तीसे पूजनीय हुए थे।

दान किसको देना चाहिये।

दान उनको देना चाहिये जिनको दानकी आवश्यकता हो। पहिले समयमें मुनीश्वरको दान दिया करते थे लेकिन अजकल हम अभागोंके लिये उनके दर्शन भी दुर्लभ है। अब उनको दान देना चाहिये जो बिचारे **अनाथ, अपाहज, लंगड़े, लूले हैं, जिनके माता पिता मर गए हैं या उन पतिव्रताओंको जो बिचारी विधवा हैं-अपना पेट नहीं भर सकती-ऊंच कुलकी हैं-मांग सकती नहीं,** जो बिचारे जैन जातिके लाल हैं और जैन जातिसे पृथक् होकर मुसलमान, ईसाई हो रहे हैं! इनको बचानेके लिये भाइयो! तुम्हारा कर्तव्य है कि श्री जैन अनाथाश्रम देहली में जी खोलकर दान करो, इसमें इस वक्त जैन जातिके ६० विद्यार्थी उच्च कोटीकी शिक्षा पाते हैं। भोजन वस्त्र औषध सब विद्यार्थियोंको दिया जाता है।

इस संस्थामें दान देनेसे आपको चारों दानोंका फल होगा। प्रथम आहारदान, विद्यार्थियोंको भोजन दिया जाता है। औषध दान, औषधि आवश्यकतानुसार दीजाती है।

शास्त्र दान, उच्च कोटीकी शिक्षा दीजाती है जिससे विद्यार्थी जाति व धर्मकी सेवा करें। अभयदान, इससे बढ़कर और क्या अभयदान होगा कि बारह २ दिनके बच्चे पल रहे हैं। विधवाओंको भी घर बैठे ४)से ८) तक मासिक सहायता दी जाती है व और सब बात आपको रिपोर्टसे विदित होगी। दान सब प्रकारका दे सकते हैं। दान इत्यादि भेजने और पत्र व्यवहार करनेका पता यह है-मंत्री, जैन अनाथाश्रम, दरियागंज, देहली।

जातिसेवक-**विद्यानन्द शेरसिंह।**
भूतपूर्व विद्यार्थी, जैन अनाथालय-देहली।

ભટ્ટારક સુરેન્દ્રકીર્તિને ખુલ્લો પત્ર!
પર્યુષણ પર્વના પવિત્ર દિવસોમાં ઝેરના ઝેરો વધારશો કે ઘટાડશો?

આપનો પરિચય સુરતમાં ગત વૈશાખ માસમાં જુના દેહરાની પ્રતિષ્ઠા વખતે આપના વ્યખ્યાનો દ્વારા કંઇક થયો તે વખતે આપની બાકીની જીંદગી જૈન સમાજના ઉત્કર્ષ માટેજ વ્યતીત થશે એમ ભાસ થતો હતો પણ દિલગીરી સાથે જણાવવું પડે છે કે ઝેરમાં પડેલા બે તડોમાં આજે આપ વધારે ફૂટ પડાવી રહ્યાનું જાણી આપને આ ખુલ્લો પત્ર લખવા વિચાર્યું છે.

ભટ્ટારકજી ? પ્રથમ તો મને એજ શંકા થાય છે કે આપને આપના હકક વગરના નૃસિંહપરા ભાઇઓના ગામમાં ચોમાસું કરવાની જરૂર કેમ પડી હશે ? વળી કહે છે કે આપે જોગ લીધો ત્યારે એક પક્ષે બહુ વિનવ્યા કે ભાવનાઓ માટે ચિઠ્ઠીઓ મુકો અને દરેકની ભાવનાઓ કરો પણ આપે તો એક પક્ષ સાથે નકકીજ કરી દીધું અને સામા પક્ષનાઓ મંદિરમાં ન દાખલ થાય માટે પ્રભુના દરબાર ઉપર પોલીસ બેસડાવીને કોઇપણ વ્યકિતના દર્શન કરવાના પ્રાથમિક હકક ઉપર ત્રાપ મારી એ કેટલો અનર્થ ? આપને યાદ તો હશેજ કે બે વર્ષપર જે વ્યકિતને માર પડવાથી તે મરવાની અણી ઉપરથી સાક્ષીભૂત તરીકે જીવી રહેલ છે તેની દશા પણ હજુ સુધરી નથી ત્યાં વળી બીજા પર્યુષણ પર્વના પવિત્ર દિવસોમાં આપની હાજરી હેઠળ કેવો પ્રયોગ થશે તેનો ખ્યાલ તો આવી રહ્યો છે પરંતુ હજુ પણ આપની કીર્તિ વધારી આપના ધર્મ બંન્ધુઓને એક રહેવાનો પ્રસંગ, જ્ઞાતિ ઝઘડાઓની ખટપટો ક્ષમાવી દેવાનો-ક્ષમાવવાનો દિવસ પર્યુષણ પર્વ આવે છે તો આપના વેષને છાજે તેવી નિર્મળ જ્યોતથી છુટા પડેલા એ અમારા બાંધવોને જોડી દેશો કે? એ બંન્ધુઓમાં રહેલા ઝેરોનું નિવારણ કરી દેશો કે ? આજે દેશ ઐકયતાની સીડી ઉપર પ્રયાણ કરી રહ્યો છે તે નિહાળો અને આપના નામ સાથે જોડાયેલા ભટ્ટારક નામ અને લીધેલા જોગનું સાર્થકપણું બનાવી હમોને ઉન્નતિના પંથે ચઢવો. નહિ તો દેશને બોજારૂપ ત્રીસ લાખ સાધુઓ કયાં નથી ? આપણે જાણીએ છીએ કે શ્વેતાંબરી ભાઇઓમાં કેટલાક સાધુઓ જેમ કલહ રોપી રહ્યા છે તેમ આપ કલહો ઘટાડવાને બદલે ન વધારો. બીજું શું લખવાનું હોય તો ઘણું એ છે, પણ ઝેરના ઝેરો એક બીજા ગળી જાય એજ મહદ્ ઇચ્છા હોવાથી હાલ તો જય જિનેંદ્ર !

ઝેરમાં ઐકયને ચાહનાર—

છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા-સુરત.

जैन समाचारावलि।

रक्षाबंधन पर्व-पानीपतमें चारों मंदिरोंमें महामुनि पूजनकी गई तथा कथा सुनाई गई थी। कुंथलगिरीमें १३-१४को सभा व संवाद हुए तथा १५को शांति होम सहना पूजन व व्याख्यान आदि हुए थे। मोरेनामें सुबह पूजन, होम, शांतिपाठ होकर सबने यज्ञोपवीत धारण किया जिसकी विधि पं० बालकृष्ण शाहकार बी. ए. ने कराई थी। शामको रक्षाबंधन कथा सुनाकर व्याख्यान दिया था। इसीप्रकार अन्य स्थानोंपर भी यह पर्व मनाया गया था।

चातुर्मास-त्यागियोंके चातुर्मासके विशेष समाचार इस प्रकार हैं-मुनि आदिसागरजी नसलापुर (बेलगाम) सेडवाल स्टेशनसे ८ मील।

भागीरथजी वर्णी-जबलपुर जैन शिक्षामंदिर

मुनि चन्द्रसागरजी-सुसनेर (ग्वालियर)

त्यागी सुखानंदजी-फिरोजपुर छावनी।

क्षुल्लक पार्श्वसागरजी-यरनाल (बेलगाम)

ब्र० आण्णाप्पा लेंगडे सेडवाल (बेलगाम)

गुरु पूजन-इन्दोर विद्यालयमें भी इस वर्ष आषाड सुदी १५को सब विद्यार्थियोंने गुरुपूजन किया था।

प्रचारक नियत-ऐलक पन्नालाल दि० जैन सरस्वति भवनकी तरफसे पं० सुब्बैयाजी प्रचारक नियत हुए हैं जो कर्नाटक प्रांतमें भ्रमणकर वहांके शास्त्रभंडारोंकी सूची व सम्हाल करेंगे।

विना मूल्य–नीचे लिखी पुस्तकें हमसे विना मूल्य मिलेंगी। जिन्हें चाहिये डाकखर्च की टिकट भेजकर मगा लेवें–१ उपासना तत्व, २ विवाहका समुद्देशय, ३ वीर–पुष्पांजलि, ४ मेरी भावना, ५ विधवा कर्तव्य। पोस्टेज चार्ज प्रथम तीनका आध १ आना, ४ का पांच तक आध आना व पांचका एक आना होता है।

जुगलकिशोर मुख्तयार पो. सरसावा
(सहारनपुर)

बंगाल आसाम–खंडेलवाल सभाका दूसरा तीसरा अधिवेशन कलकत्तेमें कार्तिकी महोत्सव पर करनेकी तैयारी हो रही है।

आवश्यक्ता–वीसपंथी आम्नायानुसार पूजा पाठ करसके व शास्त्र वांच सके ऐसे दो विद्वान विद्यार्थियोंकी भाद्रपदके लिये आवश्यक्ता है। आनेजानेका व भोजन खर्च दिया जायगा। लिखो–चुनीलाल बापुजी दलाल जलगांव (खानदेश)

शोक सभाएं–जैनसमाजके सुप्रसिद्ध अगुए श्रीमान् लाला जम्बूप्रसादजीके असमय वियोगके लिये स्थान २ पर शोक सभाएं हो रही हैं जिनमें गत ता० १९ को बम्बईमें एक शोक सभा सेठ पानाचन्द रामचन्द जौहरीके सभापतित्वमें हुई थी जिसमें पं० खूबचंदजी, पं० धन्नालालजी, सेठ रतनचंद चुनीलाल बी० ए. आदिने लालाजीकी तीर्थभक्ति व अनेक समाजसेवाका हृदयस्पर्शी व अनुकरणीय चारित्रका वर्णन किया था। अंतमें इस प्रकार प्रस्ताव पास हुआ कि "बम्बई दि० जैनसमाज परम धर्मात्मा, तीर्थभक्त श्रीमान् लाला जम्बूप्रसादजी साहब रईस सहारनपुरके असमय स्वर्गवास हो जानेपर अपना अत्यंत हार्दिक शोक प्रकट करती है और उनकी असीम धर्म परायणता एवं तीर्थभक्तिका स्मरण कर, उनकी आत्माको परम शांति प्राप्त हो ऐसी भावना प्रगट करती हुई प्रस्ताव करती है कि इसकी नकल उनके सुपुत्र लाला प्रद्युम्नकुमारजीको भेजी जाय।"

पानीपत जैन हाईस्कूलमें संस्कृत व धर्मशिक्षा विभाग।

पूज्य ब्र० शीतलप्रसादजीके चातुर्माससे पानीपतमें जैनोंमें नवचेतन आ रहा है। अभी ब्रह्मचारीजीके उपदेशसे वहांके भाइयोंने जैन विद्वान तैयार करनेके लिये जैन हाईस्कूलके साथ एक संस्कृत धर्मशिक्षा विभाग खोलनेका निश्चित किया है। इसमें परदेशी या पानीपतके पेड़ व अनपेड़ छात्र भर्ती किये जांयगे व इसके प्रार्थनापत्र सितम्बर मासतक लिये जांयगे। व अक्टूबरमें पढ़ाईका कार्य प्रारंभ होगा। इसकी नियमावलि जयकुमारसिंह जैन मैनेजर, जैन हाईस्कूल पानीपतको लिखनेसे मिल सकती हैं। वहां संस्कृत, व्याकरण, न्याय साहित्य, व दि० जैन धर्मकी शिक्षा नियत पठनक्रमानुसार दी जायगी। पं० फुलजारीलालजी व पं० भीषमचन्दजी ये काशी व मोरेना पढ़े हुए विद्वान हैं वे यहां धर्म व संस्कृत पढ़ायंगे। छात्रवृत्ति देनेके लिये वहांके भाइयोंने ९०) मासिककी सहायता जहांतक विद्यालय कायम रहे देते रहनेका स्वीकार किया है और आशा है कि इससे विशेष सहायता भी मिल जायगी।

सूचीपत्र-
प्राचीन सरस्वती भंडार-

श्री दिगम्बर जैन मंदिर नरसिंहपुरा स्थान गोपीपुरा सूर्यपुर (सूरत) जिसको लि०ज्येष्ठ सुदी ६से ११ तकमें ग्रंथोंकी सम्हाल करके बनाया ।

विदित हो कि यह मंदिर सूरतमें बहुत ही प्राचीन है। यहांका शास्त्र भंडार वर्षोंसे बिना पूछके अलमारीमें बन्द पड़ा था। चूहोंने अलमारी काटकर तथा कीड़ोंने भीतर बहुतसे शास्त्र नष्ट किये। सम्हाल करनेपर करीब ६०० शास्त्र पूर्ण निकले। शेष करीब ४०० शास्त्र अपूर्ण होंगे जिनकी सूची नहीं लिखी गई है। इस कार्यमें भाई नगीनदास नरसिंहपुराने पूर्ण सहायता दी है जिसके लिये वे धन्यवाद पात्र हैं।

संस्कृत व प्राकृतके ग्रन्थ ।

वेष्टन नं० १

१ प्रीत्यंकर चरित्र सं. प. २६लि.प.१६४६

२ पद्मनाभ पुराण विद्याभूषण कृत सर्ग १८ प० १४३ लि० स० १७०१ खंभातमें

३ नेमिनिर्वाण काव्य वाग्भट्ट प० ७७

नोट-यह अहिछत्र वासी बाहड़के पुत्र थे।

श्लो०-अहिछत्र पुरोत्पन्न प्राग्वाट कुलशालिनः

बाहड़स्य सुतश्चके, प्रबन्धं वाग्भटः कविः।

४ भविष्यदत्तचरित्र श्रीधरकृत लि० स० १६९२

५ पांडवपुराण शुभचन्द्र प० १९१

६ रोहणीकथा ज्ञानसागर कृत प० ४१

७ नागकुमार चरित्र मल्लिषेणकृत लि०१६९१

८ करकंडूचरित्र स० शुभचन्द्र प० १९

९ ,, ,, प० ७१

लि० स० अशाहि ४१ वर्षे सोजित्रामें

वेष्टन नं० २

१० क्रियाकलाप वृत्ति लि० स० १९९७

११ लोकानुयोग हरिवंशात नकशे सहित सर्ग ३ प० ७७

१२ द्रव्यसंग्रह मूल प्राकृत प० ४

१३ द्रव्यसंग्रह वृत्तिसहित प० ६९

१४ रत्नकरण्ड श्रा० प० १६ श्लोक १९१ लि० स० १६०८ में जालहणापुरमें

नोट-१५० श्लोक प्रसिद्ध हैं मिलान करना चाहिये कि ४१ श्लोक क्यों प्रसिद्ध नहीं।

१५ स्वोपज्ञलिंगानुशासन व्याकरण हेमचन्द्र कृत श्लो० ३३८४ प० ६९

१६ सामायिक प्रा० का सं० भाष्य प० १० लि० स० १६९९

१७ ,, भाष्य प० २८ लि० स० १६४९

१८ ,, पाठ सं० प० १०

१९ आलापपद्धति प० ७

२० कर्मप्रकृति सं० वृत्ति सहित प० ११ लि० स० १७१०

२१ चंडकृत प्राकृत व्याकरणकी प्राकृत सारोद्धार वृत्ति प० ११ लि० स० १६१७

२२ द्रव्यसंग्रह सं० वृत्ति प०१४ लि०१६९७

२३ तत्वार्थसूत्र मूल प० ११

२४ समवशरण स्तोत्र विष्णुसेन प० ६

वेष्टन नं० ३

२५ महपुराण प्राकृत पुष्पदंत १०२ पत्र

प० ४५१ लि० स० १६४९ इसी मंदिरमें

२६ हनुमानचरित्र ब्र० अजित प० ७५ लि० १६१४ अहमदाबाद मौनमपुरे

२७ कथाएं ७ प० ३१

२८ प्राकृत श्रीपालचरित्र श्री नरसेनदेव कृत प०४९ लि०सं० १४१४ योगिनीपुरे सुल्तान फीरोजशाह राज्ये भ० श्री क्षमाभूषणदेवके समयमें उनके शिष्य ब्र० रामदेवने लिखा था।

नोट—यह सबसे प्राचीन ग्रंथ ९६२ वर्षका लिखा है। यह प्रगट होने योग्य है

२९—जिनदत्तकथा गुणभद्र कृ० लि० स० १९९२ सूरतके सीतलनाथ मंदिरमें भ० विजय-कीर्तिके समयमें

३० नागकुमार चरित्र प० २१

३१ यशोधरचरित्र सोमकीर्ति प० ५२

३२ यशोधरचरित्र प्राकृत पुष्पदंतकृत ४ परि० प० १०९ लि०स०१५७९(प्रगटयोग्य)

वेष्टन नं० ४

३३ महापुराण प्राकृत पुष्पदंत प० २४९ ३७ पर्व तक भरत निर्वाण लि० १६४८ यहीं

३४ महावीरपुराण विद्य भूषणकृत प० १८८ अन्तके एक दो नहीं

३५ रामचरित्र श्रुतसागरकृत प० ७७ लि० स० १६०९ सूरत सीतलनाथ मंदिरमें

३६ प्रद्युम्न चरि० महसेनाचार्यकृत प० ६६ लि० स० १५९४ बबर पुत्र हुमायुं राज्ये गोपाचल दुर्गे निकट सुलक्ष्मणावलीमें भ० गुण-भद्र कालमें

३७ रोहिणी कथा प० १९ लि० स० १५५९

३८ सम्यक्त कौमुदी प० १९४ जीर्ण

३९ पुष्पांजलि कथा प० ३

४० श्रेणिकचरित्र प० ८९

४१ होली पर्व कथा प० १

४२ वर्द्धमानपुराण पद्मनंदि लि०स० १९२१

४३ धन्यकुमार च० सकलकीर्ति प० २८

वेष्टन नं० ५

४४ गोमटसार मूल प० ९७ शुद्ध लि०स० १६६७ (दर्शनीय)

४५ परीक्षामुख प० १२

४६ पार्श्वनाथस्तोत्र सवृत्ति प० ११

४७ विषापहार भूपाल चौ० सवृत्ति प०१६

४८ षट्दर्शन प० ६

४९ सुप्पयदोहा प्राकृत ७७ प० ८

५० सरस्वती स्तुति सटिप्पणी जीर्ण। नकल योग्य। शायद आशाधर कृत है।

५१ सिंदूर प्रकरण प० १४

५२ पार्श्वनाथ स्तोत्र प० ३

५३ बृहत् दीक्षाविधि समंत्र प० ६

५४ चौबीसठाणा सवृत्ति लि० १६३३ यहीं

५५ प्रतिक्रमण पाठ प० ६

५६ आराधनासारादि प० १८

५७ पद्मस्तोत्र वृत्ति स० १६९७ कारंजामें

५८ प्रश्नोत्तर श्रा० सकलकीर्ति प० १०४

५९ भक्तामर समंत्र प० ३९

६० तत्त्वसार प० ३३ (अंतका नहीं)

६१ मातृका अभिधान वंदवक मंत्रशास्त्र प० २१

६२ पद्मावती अष्टक वृत्ति मंत्र प० ११

६३ परमात्मा प्रकाश प्रा० गाथा ९५ प०५

वेष्टन नं० ६

६४ शृंगारीक काव्यानि तथा वैराग्यशतक भर्तृहरि प० ४४

६५ गर्ग पाशा केवली प० ९ लि० स० १७१३ कार्यरंजक पुरे चन्द्रप्रभु मंदिरमें। यह कारंजाका प्रचीन नाम है।

६६ वृद्ध चाणक्य प० ९

६७ स्वप्न चिंतामणि जगदेव रचित प०१६

६८ शौचाचार प० ६

६९ उत्पत्ति विचार प० ४

७० नारचन्द्र ज्योतिष जैन प० १० प्र० प्रकरण लि० स० १६३१

७१ पाशाकेवली गर्ग प० ९

७२ मातृका विहग विचार प० ४

७३ हितोपदेश कथा प० ४५

७४ स्वप्न व छींकपरीक्षा प० ३

७५ षष्टि संवत्सरी प० १९ लि० स० १६१४

७६ ,, प० २१

७७ वासुदेवके अनेक अर्थ प० ३

७८ प्रस्ताविक श्लोक प० ७

७९ सुभाषित कोषकाव्य प० ३६

८० धनंजय नाममाला प० १७

८१ सूक्ति मुक्तावली प० १६

८२ षटदर्शन हरिभद्र प० ५

८३ प्रस्ताविक श्लोक प० ९

८४ तिलकदिवस अर्चनविधि प० १९

८५ सिद्धप्रियस्तोत्र सटीक प० ७

८६ सिंदूर प्रकरण प० ९

८७ गर्गपाशाकेवली प० ९

८८ अमरकोश पूर्ण प० १३२

वेष्टन नं० ७

८९ नेमिनाथपुराण ब्र० नेमिदत्तकृत प० १३० लि० स० १६४६

९० जंबूस्वामी चरित्र प० ३०

९१ पांडवपुराण लि० १६४२ सोजित्रा प० २३२ शुभचंद्रकृत

९२ सम्यक्तकौमुदी लि० स० १४९६

९३ यशोधरचरित्र जीर्ण प० ४३

९४ हरिवंश पु० श्रीभूषण प० २४४ लि० स० १७१० अहमदाबाद शीतलनाथ मंदिरे

९५ त्रिकाल चौवीसी स्थान प० ४

९६ अनंतव्रत कथा प० ४

९७ त्रिषष्टि स्मृतिः (महापुराणांतर्गत तत्व संग्रह)आशाधर कृत श्लो० ५०५ लि०१६०२

नोट—इसमें ६३ शलाका पुरुषोंके चरित्रका संक्षेप है। प्रगट योग्य है।

वेष्टन नं० ८

९८ पार्श्वनाथ च० सकलकीर्ति लि०१६०२

९९ पद्मनामपुराण शुभचंद्र प० ११८ लि० स० १६४८ जवाच्छनगरे

१०० भविष्यदत्तचरित्र प० ७६

१०१ विद्याविलासचरित्र प० ७

१०२ नेमिनाथचरित्र प०१६लि० १६७२

१०३ वृषभनाथच० प० २२७ सकलकीर्ति

वेष्टन नं० ९

१०४ त्रिलोकसार मूल सटिप्पणी प० ५९ लि० स० १६८५

१०५ द्रव्यसंग्रह प० ४

१०६ विदग्ध मुखमंडनकाव्य धर्मदास प० ३३ लि० स० ११९८ (प्रगट योग्य)

१०७ आलोचना सूत्र प्राकृत प० ८

१०८ पंचाख्यान द्वार कथा (पंचतंत्र) प० ३९ लि० स० १९४९

१०९ उपादसकाव्य १७ प० ९

११० धनंजय नाममाला प० १८

१११ सामायिक पाठ प्रा० लि० सं० १९७९

११२ वाग्भट्टालंकार प० १७ लि० १६९९

११३ समुच्चय संख्या प० २२

११४ प्रायश्चित्त समुच्चय व्याख्या सहित नंदिगुरुकृत प० ७९ (अच्छा लिखा)

११५ क्रियाकलाप टीका प्रभाचंद्र प० ४९ लि० १७०१ अहीरपुर श्री नाथ मंदिरमें

११६ जिनसेन सहस्रनाम टीका विश्वसेनकृत

११७ मदनपराजय काव्य जिनदेव कृत ५ सर्ग प० १४ लि० स० १५९३ घनौघदुर्गे (प्रगट योग्य)

११८ पंचास्तिकाय वृत्ति जयसेन प० ११६ लि० स० १६०९ (अच्छी लिखी)

११९ द्रव्यसंग्रह सवृत्ति प० ११

१२० ,, मूल प० ५

१२१ ज्ञानार्णव ध्यान २१

१२२ चौबीसठाणा १७ लि० १६४४ ईडरमें

१२३ द्रव्यसंग्रह व नवरत्नी १०

१२४ सिंदूर प्रकरण १९

१२५ ,, १४

१२६ ,, १०

१२७ एकाक्षर नाममाला ७

१२८ सिद्धांत चर्चा १४

१२९ ऋद्धि वर्णन ५

१३० तत्वार्थरत्नप्रभाकर प्रभाचंद्र १०२ लि० स० १९९६ (सुत्र टीका)

१३१ द्रव्यसंग्रह, ज्ञानसार व श्रावकाचार दोहा गाथा २२७ (प्रगट योग्य)

१३२ द्रव्यसंग्रह ९

१३३ २४ ठाणा चर्चाका० ८२

१३४ ऋद्धिमंत्र सार्थ विधि नं० ४८ प०७

१३५ पाशा केवली प० १३

वेष्टन नं० ११

१३६ प्र० श्रावका० ७४ लि०स०१९९९ वाटिका नगरे

१३७ आराधनासार प्रा० सं० टि० प० ७

१३८ पंच प वर्ता स्वरूप ५

१३९ शकुनावली ५

१४० पद्मनंदि पच्चीसी ६३ लि.सं.१७०५

१४१ परमात्मा प्र० प०१७ लि० १६१७

१४२ संबोध पंचासिका प्रा० प्रश्नोत्तर नाममाला सुतक विचार प० ९

१४३ सज्जनचित्त० लप ४

१४४ द्रव्यसंग्रह मूल ५

१४५ अमरकोश पत्रे १०८ शुद्ध

१४६ समयसार कलश अमृतचंद्र प० १२ लि० स० १९९६ क्षुल्लकी रोहिणी को दिया

नोट—इस समय आर्यिकाजी रोहिणी संस्कृत कलशोंका मनन करती थीं।

१४७—प्रमाणमंजरी प० ८

१४८ धनंजय नाम० प० ९

१४९ प्रस्ताविक श्लोक ३६

१५० स्वप्नाध्याय ३

१५१ प्रस्ताविक श्लोक प० ५

१५२ लोकानुयोग हरिवंश ८२

१५३ महाभारतादि श्लोक रात्रिभोजन त्यागमें

१५४ तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति लि० स० १६३१
१५५ अमरकोश प० ७७
१५६ धनंजय नाममाला प० १८
१५७ अनेकार्थ मंजरी १६
१५८ पंचास्तिकाय मू० सं०छाया प० १४ जीर्ण लि० स० १६९१
१५९ कर्म प्रकृति सं० अभयचन्द्र १६
१६० भक्तामर सटि० १०
१६१ वसुनंदि श्रा० की पंजिका लि० स० १६०६
१६२ वाग्भट्टालंकार ९
१६३ जिनस्तवन श्लो० २५ प० ३
१६४ प्र० श्रावका० लि० स० १६९४

वेष्टन नं० १२

१६५ कथाकोश चन्द्रकीर्ति ९२ आदिका नहीं
१६६ पार्श्वपुराण ,, १५ सर्ग प. १०९ श्लोक २७१५ लि०स० १६९८ (प्रगट योग्य)
१६७ यशोधरचरित्र सोमकीर्ति लि० स० १६४२
१६८ हनुमानचरित्र अजित स० १६११
१६९ भविष्यदत्तच० श्रीधर लि० १५९८ सूर्यपुर
१७० वरांगचरित्र विद्याभूषण प० ६० लि० १६६७ सागवाड़ा
१७१ कर्पूरमंजरी नाटक प्राकृत राजशेषरकृत लि० स० १५७२ (प्रगट योग्य)
१७२ सुदर्शनचरित्र सकलकीर्ति ६१ लि० १६६४ भिलोड़ा (बागड़)
१७३ पद्मनाथ पुराण ६३ लि० १६२३
१७४ जयकुमार पुराण ब्र० कामराज १० सर्ग प० ७६ लि० स० १७१३ (प्रगटयोग्य)
१७५ श्रीपालच० ब्र० नेमदत्त प० ६१ लि० स० १६४३
१७६ चंदनाचरित्र २८ लि० १६३१
१७७ लब्धिविधानकथा ६
१७८ अशोक रोहिणीकथा २०
१७९ **शांतिनाथ पुराण** प्राकृत सचित्र रेधू कविकृत प० ६३ दर्शनीय (प्रगट योग्य)
१८० पुण्य श्र० रामचन्द्र ११९ लि०१५१९ एडछ श्री सोमदत्त राज्ये गिरिपुरे मल्लिनाथ मंदिरे

वेष्टन नं० १३

१८१ महापुराण स० ४४७ जीर्ण
१८२ आराधना कथाकोश लि. स. १६८० आंगलपुरे शाहजहांराज्ये भ० चन्द्रकीर्ति समये
१८३ हरिवंश ब्र० जिनदास २४७
१८४ उत्तरपुराण जीर्ण ३११ अंतका१ नहीं
१८५ हनुमानचरित्र ब्र० अजित ९० लि० १६०२ जाल्हणापुर
१८६ श्रीपाल च० सोमकीर्ति प० ४

वेष्टन नं० १४

१८७ त्रिलोकसार सं० वृत्ति १४६ जीर्ण लि० स० १५८०
१८८ ,, वृत्ति ९८
१८९ सार चौवीसी सकलकीर्ति कृत ९० लि० १५१८ बांसवाड़ा
१९० **तत्वसार** संस्कृ वृत्ति भ० कमलकीर्तिकृत प० ७२ लि० सं० १५९१ करहलमें (अच्छी टीका देवसेन कृत तत्वसारपर है प्रगट योग्य है)

१९१ भक्तामर सं० वृत्ति १८

१९२ मदन पराजयकाव्य ४६

१९३ जिनयज्ञ कल्प आशाधर प० ९८ लि. स० १५९४ नौगाममें (आदि पत्र नहीं)

१९४ चौबीस ठाणा ११

१९५ सूक्त मुक्तावली २२

१९६ द्रव्यसंग्रह प्रभाचन्द्रकृत सं० वृत्ति १८ (प्रगट योग्य)

१९७ त्रिलोकसार २१

वेष्टन नं १५

१९८ यशस्तिलक चंद्रिका २७३ अंतके पत्र नहीं।

१९९ गोमटसार सं० वृत्ति १८३ आदिके कुछ नहीं। लि० स० १७२४

२०० त्रिलोकसारवृत्ति २२९

वेष्टन नं० १६

२०१ पद्मपुराण ब्र० जिनदास अंतके कुछ पत्र नहीं।

२०२ प्रद्युम्नचरित्र शुभचन्द्र ७१ लि० १५९३

२०३ रात्रिव्रत कथा ६

२०४ कथाकोश छोटा २०

२०५ नागकुमार कथा प० ३२

२०६ जिनदत्त कथा गुणभद्रकृत लि० स० १६५६

२०७ भविष्यदत्त चरित्र प्राकृत सं० (दर्शनीय) प० ८२ अंतके कुछ नहीं (चित्र बहुत सुन्दर हैं तथा प्रगट योग्य हैं)

२०८ जीवन्धर चरित्र शुभचन्द्र ११० लि० १६०१ देवगिरिमें (प्रगट योग्य)

२०९ हरिवंश पुराण जिनदास २१९

वेष्टन नं० १७

२१० समयसार कलश प० २४

२११ कर्म प्रकृति सं० प० २९

२१२ त्रिलोकसार सचित्र ६५

२१३ प्रतिष्ठा तिलक नरेन्द्रसेन जीर्ण ४०

२१४ अमरकोश १४३ लि० १७२०

२१५ कल्याण मंदिर १२

२१६ ,, सटीक १४

२१७ ,, ,, १६

२१८ धनंजय नाममाला २४

२१९ त्रिलोकसार मूल ७२ सर्व धारा वर्णन

२२० प्राकृत नाममाला १३ लि० १६३०

२२१ जन्मपत्री विचार २० जैन ज्योतिष

२२२ सत्व स्थानभंग प्ररूपणा सं० वृति कनककनंदि प० १३

२२३ प्रशमरति प्रकरण सं० उमास्वामी कृ ११६

२२४ चौबीस ठाणा २८

२२५ तत्वसार ३

२२६ षट्दर्शन ५

२२७ कर्मप्रकृति मूल ९

२२८ चौबीस ठाणा २३

२२९ धनंजय १२

२३० सज्जनचित्तवल्लभ ४

२३१ **कर्मविपाक** १७ (प्रगट योग्य)

२३२ गोमटसार मूल २४ ठाणा १८

२३३ न्यायशास्त्र ६७

२३४ सहस्रनाम आशाधरवृत्ति श्रुतसागर

वेष्टन नं० १८

२३५ पुण्याश्रव कथाकोष १०८

२३६ पांडव पुराण १७७

२३७ नेमिपुराण ११७
२३८ पांडवपुराण श्रीभूषण प० २७८
२३९ प्रद्युम्नचरित्र २१७लि० स०१६४४
वेष्टन नं० १९
२४० सिंदूर प्रकरण ११
२४१ ३० चौवीसी नाम ९
२४२ सहस्रनाम ४
२४३ आराधनासार मूल ७
२४४ साठि संवच्छरी १९
२४५ षट् दर्शन ४
२४६ ज्ञानार्णव ध्यान ८
२४७ पद्मनन्दी पचीसी ८५ शुद्ध जीर्ण
२४८ पंच परावर्तन ४
२४९ त्रिलोकसार ७१ आदिका नहीं
२५० पावापुरी कल्प प्रा० १२
२५१ देवागमस्तोत्र ८
२५२ प्रश्नोत्तर श्रावकाचार ११९
२५३ **अध्यात्मोपनिषद्** हेमचन्द्रकृत ४ सर्ग प० १२

नोट—यदि यह अबतक प्रकट न हुआ हो तो प्रगट करना चाहिये।

२५४ सिंदूर प्रकरण १६
२५५ पाशाकेवली सर्ग ७
वेष्टन नं० २०
२५६ जंबूस्वामी चरित्र ५६ लि० १६३८
२५७ पूजा कल्पद्रुमकथा श्री भूषण ४६
२५८ ज्येष्ठ जिनवरकथा ५
२५९ **श्रीपालचरित्र** प्राकृत **नरेन्द्रसेनकृत** प० २९ (प्रगट योग्य)
२६० वृषभनाथ पु० ब्र० चंद्रकीर्ति कृत ३१४
२६१ हरिवंश पुराण जिनदास कृत २८२
२६२ **यशोधरचरित्र** प्राकृत पुष्पदन्तकृत १९२ लि० स० १५७३
२६३ हस्त० कल्पसूत्र व्या० १९
२६४ जम्बुस्वामी च. जिनदास लि. १६३४
२६५ नागकुमार कथा २१
वेष्टन नं० २१
२६६ यशोधर च० श्रुतसागर ४०
२६७ हनुमानचरित्र अजित ८२
२६८ वरांगचरित्र वर्द्धमान कृत ७७
२६९ पांडवपुराण ११२ लि० १६६२
२७० हनुमानचरित्र ९१ लि० १६०३
२७१ वृषभनाथच० श्रीवर २४० अंतके नहीं
२७२ ,, सकलकीर्ति १६६
२७३ करकंड कथा १०
२७४ लब्धिविधान ९
२७५ नेमिचरित्र काव्य मेघदूतपर समस्या २१ जीर्ण (प्रगट योग्य)
२७६ सुगंध दशमी कथा ५
२७७ श्रीपालचरित्र विद्यानंदिकृत स. १५२७
२७८ पंचस्तोत्र २९ लि० स० १६९७
२७९ विद्धुग्रहक टीका ५
२८० त्रिंशच्चतुर्विंशतिका पूजा प० २९
२८१ कर्मदहन प० ३७ (अंतका नहीं)
२८२ गणधरवलय पूजा प० ९
२८३ कर्मदहन पूजा प० १८
२८४ ऋषिमंडलयंत्रपूजा प० ३८ विद्याभूषण कृत लि० स० १६९१
२८५ ऋषिमंडल पूजा लि० स० १६४३
२८६ दशलक्षण पूजा प्रा० रेधूकृत प० १०

२८७ ऋषिमंडल पूजा प० १३
२८८ गणधर पूजा प० ४
२८९ अष्टकरम चूरण पूजा प० ६
२९० कलिकुंड पूजा विद्याभूषण कृत प० ७
२९१ सप्तऋषि पूजा श्रीभूषणकृत प० १२
२९२ श्रुतस्कंध पूजा ,, ,, १४
२९३ पल्यविधान पूजा त्रिभुवनकीर्तिकृत ८
२९४ त्रीसचौवीसी पूजा प० ८३
२९५ वृद्धशांतिक पूजा प० ७३
२९६ होमविधि ,, ६
२९७ पद्मावती पूजा ,, १९
२९८ गणधरवलय ,, ,, ७
२९९ शांतिक पूजा विधान पं० धर्मदेव पत्रे २४ जीर्ण
३०० भक्तामरस्तोत्र पूजा प० १९ लि० स० १७०२
३०१ [illegible]ऋषि पूजा पत्रे ७
३०२ सिद्धचक्र पूजा ,, २३
३०३ चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा प० १४
३०४ समवशरण पूजा ,, २१
३०५ वृहत्सिद्ध पूजा विद्याभूषण कृत
३०६ ऋषिमंडल पूजा ,,
३०७ रत्नत्रय स्तवन विधि
३०८ ऋषिमंडल पूजा
३०९ कलिकुन्ड पूजा
३१० वृहत् सिद्धचक्र पूजा
३११ १६ कारण जयमाल अभयचंद्रकृत
३१२ पल्यविधान पूजा
३१३ पार्श्वनाथ वृहत्पूजा विद्याभूषणकृत वेष्टन नं० २३
३१४ प्रतिष्ठातिलक आशाधर जीर्ण ९५
३१५ चारित्र शुद्धि या १२३४ व्रत पूजा लि० सूर्यपुरे चन्द्रप्रभु चैत्यालय
३१६ जिनमातृका विधान ८
३१७ ध्वजारोहणविधि प० ११
३१८ शांतिक सपम्रविधि लि० स० १९१४ प्रल्हादपुरे
३१९ चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा
३२० जलहोम ७
३२१ ध्वजारोहण विधि ११
३२२ अनन्तव्रत भूषणकृत
३२३ चरित्रशुद्धि पूजा
३२४ ऋषि मंडल पूजा
३२५ जिनसंहिता सारोद्धारे प्रतिष्ठा तिलक नाम्नि त्रिवर्णिकाचार ब्रह्मसूरिरचित पत्रे ८
३२६ सिद्धचक्रपूजा
३२७ [illegible]तपरमस्थान अर्घ
३२८ रत्नत्रयपूजा नरेन्द्रसेनकृत
३२९ पद्मावती पूजा
३३० पल्यविधान पूजा
३३१ ,,
३३२ ,,
३३३ ऋषिमंडल पूजा
३३४ गणधरवलय पूजा सोमकीर्ति सप्तऋषि
३३५ त्रिकाल चौवीसी पूजा
३३६ कर्मदहनपूजा विद्याभूषण कृत
३३७ पंच परमेष्ठी पूजा श्रीभूषण कृत
३३८ वास्तुपूजा विधि प० ७
३३९ धर्मचक्रपूजा (सिद्ध)
३४० कलिकुंड पूजा
३४१ होमविधि

३४२ रत्नत्रयपूजा राजकीर्ति पूजा
३४३ पद्मावतीपूजा
३४४ चिंतामणि पार्श्वनाथपूजा विद्याभूषणकृत
३४५ चिंतामणि पार्श्वनाथपूजा शुभचन्द्र कृत

वेष्टन नं० २४

३४६ पल्य विधान पूजा
३४७ कर्मदहनपूजा
३४८ क्षेत्रपालपूजा
३४९ त्रिकाल चौवीसी पूजा
३५० त्रिशच्चतुर्विंशति पूजा विद्याभूषणकृत
३५१ ९६ क्षेत्रपाल पूजा
३५२ जलहोम विधि
३५३ कलिकुण्ड पूजा
३५४ मुक्तागिरी बावनगजा आदि पूजा
३५५ सप्तऋषि पूजा
३५६ सोलहकारणव्रतोद्यापन
३५७ सप्तऋषि पूजा
३५८ लघुश्रुतस्कंध पूजा
३५९ कर्मदहन पूजा
३६० महा अभिषेक विधि नरेन्द्रसेनकृत लि० सं० १४९६ वाटरडा ग्राम (उदयपुर) आदि चैत्यालयमें भ० रत्नकीर्ति
३६१ शुक्रपंचमी पूजा पं० चांगजीकृत लि० स० १६४६ अवासमें
३६२ ९६ क्षेत्रपालपूजा
३६३ सिद्धचक्र पूजा शुभचंद्रकृत लि० स० १५९४
३६४ पद्मावती स्तोत्र
३६५ लब्धिविधान कथा

गुजराती भाषाके ग्रंथ।

वेष्टन नं० २५

३६६ पुष्पांजलि अनंत व्रत कथा आदि
३६७ रोहणी सुगंधदशमी आदि कथा
३६८ गुणस्थान द्वारा कर्मक्षपण
३६९ दानशील तप भाव संवाद
३७० आदित्य व्रत कथा
३७१ अणिरुद्धहरण आख्यान जयसागरकृत
३७२ सिंहासन बत्तीसी कथा स० १६४५
३७३ नेमनाथ बहुगुण सागर छंद
३७४ महापुराण त्रिभुवननी वीनती
३७५ सवाया छत्तीसी
३७६ आदीश्वर फाग भ० ज्ञानभूषण कृत
३७७ पुरन्दरविधान कथा
३७८ समकित मंडन रास
३७९ सम्मति साझाय
३८० प्रायश्चित्ति आदि
३८१ मंत्र व औषधियें
३८२ त्रिलोकसार चोपाई
३८३ नेमनाथ राजीमती फागश स० ११५७
३८४ त्रिलोकसार चोपाई
३८५ श्रेणिक आख्यान छंद ब्र० हर्षसागरकृत
३८६ हनुमानरास ब्र० जिनदास कृत
३८७ श्रावकाचार पद्मशाहकृत जीर्ण
३८८ श्रीमंदरस्वामी रास
३८९ चंदनषष्ठी व्रत कथा
३९० सुरसुंदरी रास
३९१ धर्मपरीक्षा रास रची संवत १६२५ वीरदास कृत

वेष्टन नं० २६

३९२ अक्षय दशमी कथादि
३९३ सुकुमाल स्वामीरास
३९४ श्रेणिक पृच्छा
३९५ भावदेव भवदेव रास
३९६ पांडव छंद
३९७ महापुराण विज्ञप्ति
३९८ निर्दोष सप्तमी कथा
३९९ मौन एकादशी व्रतकथा
४०० हरिवंश रास
४०१ पंच इन्द्री संवाद
४०२ भरतेश्वरराणी धर्मचर्चा
४०३ नरसिंहकुमाररास ब्र० ज्ञानसागर कृत
४०४ नेमिजिन फाग
४०५ चंदनषष्ठी व्रत कथा
४०६ प्रद्युम्न रास सं० १६९१में बनाया श्रीभूषणने सूर्यपुर (सुरत) चन्द्र प्रभुमंदिरमें
४०७ श्रीपालरास
४०८ समकित बार व्रत कुल लि०सं०१९१७
४०९ मौनव्रत कथा
४१० सुरसुन्दरीरास
४११ आदित्यवार कथा
४१२ संतोषबीसी। आदिका नहीं
४१३ सातव्यसन रासादि
४१४ रात्रिभोजनरास
४१५ सिंहासन बत्तीसी कथा
४१६ सुकोशलरास
४१७ सप्तपरमस्थान कथा
४१८ शासनदेवी छंद
[illegible]णमंदिरकी गुजराती टीका लि० सं० १५९३
४२० त्रिलोकसार ध्यान
४२१ कर्मविपाकरास
४२२ श्रेणिक पृच्छा
४२३ दानशीलतप भावना
४२४ बलिभद्र सज्झाय
४२५ पञ्चांगुलिकल्प मंत्र
४२६ रामसीता रास
४२७ पखवास व्रत

अजैन ग्रंथ

वेष्टन नं० २७

४२८ किरातार्जुनीय काव्य १८ पर्व लि० सं० १४९२
४२९ चंडिकास्तोत्र सवृत्ति लि०सं०१९१९ रचित चंडीशत टीका
४३० किरातार्जुनीयकाव्य सवृत्ति लि० सं० १६९८ सूर्यपुरे चन्द्रप्रभु मंदिरे।
४३१-१ कुमारसंभवकाव्य कालिदासकृत लि० सं० १६९९
४३१-२ किरात टीका मल्लिषेण सुरि १७ सर्ग
४३२ ,, ४ था सर्ग
४३३ शिशुपालवध काव्य ७ सर्ग
४३४ कुमारसंभव टीका दिन [illegible] ९ सर्ग लि० १६३१
४३५ किरात टीका १८ सर्ग मल्लिषेन
४३६ मेघदूतकाव्य सं० लि० सं० १४९९ कालिदास कृत
४३७ भोज प्रबंध पं० बल्लालकृत लि० सं० १७२८
४३८ कविकल्पद्रुम पं० वोपदेवकृत
४३९ तर्कसंग्रह टीका
४४० कालज्ञान

४४१ सारोद्धार ज्योतिष
४४२ शैवमुख वज्रसूची
४४३ नैषधकाव्य अपूर्ण
४४४ किरातार्जुनीय लि० सं० १६९७ कार्यरंजकपुरे
४४५ रघुवंश दर्पण हेमाद्रिकृत सर्ग १०
४४६ किरात लि० स० १६९८ सूर्यपुरे चन्द्रप्रभु चैत्यालये
४४७ मेघदूत कालिदासकृत लि० स० १६७६
४४८ न्यायसंग्रह आत्मारामकृत
४४९ सप्तपदार्थी टीका
४५० रघुवंश कालिदास

वेष्टन नं० २८

४५१ सिद्ध दुनामिव काव्य
४५२ रघुवंश
४५३ कुमारसंभव लि० स० १६९७
४५४ भर्तृहरि टीका लि० स० १६६९ देवपल्ली नगरीमें
४५५ तर्क भाषा
४५६ तर्कभाषा प्रकाश गोवर्धन
४५७ काव्य एक
४५८ योगवासिष्ठ
४५९ छंदशास्त्र
४६० वसंतराज शकुनग्रंथ लि० स०१६३० देवगिरि
४६१ न्यायसागर लि० १९९४ इला प्राकारे
४६२ तर्कभाषा
४६३ वृत्तरत्नाकर भट्टकेदार
४६४ तर्कभाषा
४६५ वृत्तरत्नाकर
४६६ सामुद्रिक लक्षण
४६७ निघटीका प० विद्याधर कृत जीर्ण लि० स० १७०९
४६८ किरातटीका लि० सं० १६१०
४६९ विवाह पटल प० केशवकृत
४७० मेघदूत कालिदास कृत लि० १६३५
४७१ तर्क दीपिका
४७२ माघटीका वल्लभदेव कृत
४७३ मेघदूत टीका लि० स० १९३४ चंद्रकीर्ति आ० ने

वेष्टन नं० २९

४७४ सप्त पदार्थी
४७५ रघुवंश लि०स० १६६१ जालणापुरे
४७६ अनेकार्थध्वनि मंजरी लि०स०१८०१
४७७ हरीतकी कल्पवैद्य
४७८ तर्कभाषा मूल
४७९ सप्तपदार्थी
४८० ,,
४८१ तर्कभाषा
४८२ मुमुक्षु पुना
४८३ रघुवंश (आदि पत्र नहीं)
४८४ सप्तपदार्थी लि० स० १५८९
४८५ किरात टीका एकनाथ भट्ट कृत लि० स० १६९१
४८६ ज्योतिषचक्र नकशो
४८७ शास्त्रमन्जरी
४८८ सप्तपदार्थी
४८९ तर्कभाषा
४९० ,,

४९१ सारगंधार वै०
४९२ द्वात्रिंशत्पुरुष लक्षण
४९३ कुसुमांजली
४९४ विवाह पटल
४९५ रघुवन्श स० ५
४९६ वैद्यक ग्रंथ
४९७ परिभाषा
४९८ निघं: वैद्य
४९९ कुंडमंडप कौमुदी
५०० ज्योतिषसार संग्रह

वेष्टन नं० ३०

५०१ कौमुदी प्रक्रिया व्याकरण
५०२ सारस्वत प्रक्रिया अपूर्ण
५०३ सारस्वत
५०४ ,,
५०५ कौमुदी प्रक्रिया
५०६ सारस्वत प्र० (अपूर्ण)
५०७ सिद्धांत कौमुदी पूर्वार्द्ध
५०८ सारस्वत प्र० लि० स० १६९६
५०९ ,, लि० स० १६५३
५१० चुरादियोणितो धातवः
५११ रूपावली
५१२ सारस्वत प्र० लि० स० १६७१
५१३ प्रकृत सूत्रवृति कात्यायन
५१४ नीलकन्ठ कविकलित शब्दशोभा
५१५ सारस्वत व्या०
५१६ ,,
५१७ व्याखण्ड बहुत पत्रे
५१८ कौमुदी प्रक्रिया
५१९ व्याकरण (पत्र ११ से १३२ तक)
५२० व्याकरण फुटकल पत्रे

वेष्टन नं० ३१

५२१ काव्य १ अपूर्ण
५२२ रसमंजरी भानुदत्त
५२३ वैद्यग्रंथ अपूर्ण
५२४ तर्क परिभाषा
५२५ योगशत वैद्यक
५२६ ,, (पत्र एक नहीं)
५२७ मेघदूत लि० स० १४१२

हिन्दीके जैन ग्रंथ।

५२८ समयसार कलश हिन्दी टीका पुन्य-पाप अधिकार
५२९ ,, संवर निर्जरा
५३० ,, बन्ध ,,
५३१ ,, मोक्ष
५३२ ,, अजीव
५३३ ,, आश्रव
५३४ ,, प्रथम अधिकार
५३५ प्रवचनसार टीका हेमराज
५३६ समयसार नाटक बनारसीदास
५३७ राजुल पच्चीसी
५३८ तिथिषोडसी
५३९ नंदलाल कविकृत अनेकार्थ नाममाला
५४० चिंतामणि पार्श्वनाथ जैमाल
५४१ भक्तामर भाषा
५४२ बनारसीविलास
५४३ ८४ बोल श्वे० संस्कृतादि
५४४ स० सामायिक भाष्य (आदिका १ पत्र नहीं।)
५४५ १ मराठी भाषामें स्तोत्रादि टीका
५४६ नेमनाथ फाग गु०

५४७ साठ संवत्सरी
५४८ चिंतामणि पा० पूजा
४५९ राजनीति समुच्चय गु०
५५० सुभाषित ग्रंथ संस्कृत सकलकीर्ति
५५१ वासुदेव आख्यान
५५२ गर्गपाशा केवली
५५३ बालावबोध वृत्ति
५५४ षट्दर्शन
५५५ रेणुका रास
५५६ शांतिनाथ स्तुति मेरुतुंग गु०
५५७ गुरावली
५५८ शृङ्गार शतक
५५९ रोहिणी कथा
५६० अशोक सप्तमी कथा
५६१ वास्तुपूजा विधान
५६२ तर्क परिभाषा
५६३ धातु संख्या
५६४ शीलोपदेशमाला प्राकृत
५६५ आदीश्वर फाग गु०
५६६ दशलक्षण जयमाल
५६७ पासाकेवली
५६८ जिनसेन सहस्रनाम टीका
५६९ थूलभद्र चंद्रायण
५७० अष्टसहस्री लि० स० १७३७ शुरूके कुछ नहीं
५७१ अष्टसहस्री टिप्पणी
५७२ उत्तरपुराण शुरूके कुछ नहीं लि०स० १७११
५७३ नीतिसार इन्द्रनन्दि
५७४ आत्मसंबोध प्रा०
५७५ विरदावली
५७६ कलिकुंड बेठ
५७७ जयपताका कल्प
५७८ गणित सूत्र
५७९ समवशरण रचना गु०

वेष्टन नं० ३२

५८० गोमटसार कर्मकांड सं० टीका (अपूर्ण)
५८१ त्रिलोकसार सचित्र मूल आदिके कम
५८२ प्रश्नोत्तर श्रावकाचार आदिके २ कम
५८३ स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा मूल लि० १६३७
५८४ त्रिलोकसार मूल कुछ कम
५८५ गोमटसार स० वृत्ति जीवकांड पत्र १६ कम हैं
५८६ धनपाल चरित्र प्राकृत लि० स० १४८२ सुल्तान आलमशाह चंदेरी देशे प० ३० से ११२

वेष्टन नं० ३३ नकशी
,, ३४ अपूर्ण पुराणादि प्रथमानुयोग
,, ३५ ,, ,, ,,
,, ३६ ,, ,, ,,
,, ३७ अपूर्ण पुराण सिवाय अन्यग्रंथ
,, ३८ ,, ,, ,,
वेष्टन नं० ३९–४०–४१–४२–४३ गुटके
,, ४४–४५–४६–४७ फुटकल पत्रे

शीतलप्रसाद ब्रह्मचारी।

पवित्र काश्मीरी केशर–
का भाव २।) फी तोला है।
मैनेजर, दिगम्बर जैन पुस्तकालय–सूरत।

महिलाओंका कर्तव्य।

उपर्युक्त शीर्षक मेरे लिए एक अनोखासा जान पड़ता है क्योंकि महिला समाजको अनादिकालसे यह स्वत्व प्राप्त रहा है कि वह जगतके नायक और विधायक पुरुषों एवं सतीशिरोमणि स्त्रियोंको उनके उत्कृष्ट मातमय उत्तम आदर्श मार्गपर अनुशीलन और अनुगमन करनेकी शुक्ल सौम्य-पवित्र शक्ति अपनी ही रचनात्मक मौलिक गोदमें शैशव कालसे ही अर्पण करती रहें ! यही वह पुण्यमई मानव दुखपोषिनी संसारताप विच्छेदनी समाज है, जिसने श्री तीर्थंकर भगवानको जन्म दे जगतको शांतिसुखका मार्ग समयर पर निर्दिष्ट कराया ! इसने महात्मा बुद्ध जैसे दयालु राणा प्रताप जैसे प्रतापी पुरुष रत्नों और महिलारत्न सीता और सावित्री, त्यागमूर्ति ब्राह्मी और सुन्दरी जैसी सती शिरोमणियोंको उत्पन्न किया था। और सांप्रतमें महात्मा गांधी आदिको इन्हींकी कोखने संसारसे पुद्गलबादकी सत्ताको हटानेके लिए कर्मक्षेत्रमें अवतीर्ण किया है। फिर भला ! उनके कर्तव्यका यहां पर खाका खींचना अनाधिकार्यचेष्टा मात्र होगा। उन्हें अपना कर्तव्य स्वयं अपने नेत्रोंके समक्ष जीती जागती मूर्तिके स्वरूपमें उपस्थित होगा। पर तो भी मैं एक उन्हींकी गोदमें लालित पालित भवातापोंके तापसे भयभीत पुरुष हृदय दो शब्दोंको उन बहिनोंके लिए जो अपने इस भारी भारको अपनी घरेलु उलझनोंमें और सुलझनोंमें भुलाए हुए हैं कहना चाहता हूं। यह तो उनको मालूम ही होगा कि वे संसारमें कैसेर दिग्गजर कार्य कर चुकीं हैं और कर रही हैं और करती रहेंगी। सच पूछेए तो संसारकी बागडोर उन्हींके हाथोंमें है। इसलिए उन्हें अपनी इस भारी जिम्मेवारीकी चौकसी हरदम रखना चाहिए। उन्हें अपने और मतलबी स्वार्थी कार्योंको गौण (कम) करके अपने आत्मोन्नतिके उपायोंको अपनाना होगा।

आत्मोन्नति दो उपायोंसे कही जासक्ती है। एक तो शुद्धोपयोगके लिहाजसे अपने आत्मतत्वका ध्यान करके संयम, शील, उपवास, व्रत आदि समझ-बूझकर करना। जिससे निजस्वरूपका भान हो और मोक्षमार्गका ज्ञान हो। बिना जानेबूझे देखादेखी इनको करना कार्यकारी नहीं। इसलिए आपका पहिला कर्तव्य होगा कि आप धर्मकी जानकारीके लिए विद्याध्ययन करें—लिखना पढ़ना सीखें और धार्मिक पुस्तकको पढ़कर धर्मके स्वरूप समझें। अपनी कन्याओंको पाठशालाओं और श्राविकाश्रमोंमें भेजिए और आप खुद ग्राममें ही यदि आप बाहर नहीं जासक्तीं हैं तो अपनी किसी विद्वान् महिलासे अथवा अपने पिता भाई आदिसे शिक्षा ग्रहण कीजिए। ऐसा करनेसे आप बहुतसे वृथा पापोंसे बचेंगीं और अपनी संतानको आदर्श संतान बना सकेंगी, जिससे समाजमें प्रचलित धर्मके नामपर ढोंग और मिथ्या कुपथाओंका अन्त होजायगा।

आपको मालूम होगा कि बाहरी दिखावेसे काम नहीं चलता। आप देखतीं होंगीं बहुतसी स्त्रियां दिखावेके लिए मुलम्मेका जेवर पहिनतीं हैं लेकिन किसी वक्त उनकी असलियत प्रगट होजाती है

और उनको बड़ी लज्जा उठानी पड़ती है। दिखावटके लिए यह सब कुछ किये—पूछनेपर झूठ भी बोले पर अन्तमें दुःख और जिल्लत उठानी पड़ी। यह दिखावट और ढोंग पुरुष समाजमें बेहद घुसी हुई है। इसका कारण मैं आपको ही बतलाऊं।। क्योंकि जैसे कुम्हार अपने बरतनोंको चाहे वैसा बनासक्ता है वैसे ही आप अपने पुत्रपुत्रियोंको अच्छा बुरा बनासक्तीं हैं। जब आपमें दिखावट और ढोंग है तो सारी समाज उसीरूपमें ढल जायगी और दिखावट और ढोंगसे उल्टा दुख बढ़ता है यह आपको मालूम होगा।

श्री आराधना कथाकोषमें आपने पढ़ा होगा कि प्राचीन कालमें प्रसिद्ध अजितावर्त नगरके राजा पुष्पचूल थे और उनकी रानी पुष्पदत्ता। राजसुख भोगते राजा पुष्पचूलने एक दिन अमरगुरु मुनिके निकट धर्मका स्वरूप सुना जिससे उनको संसारके विषयसुखोंसे वैराग्य होगया और उन्होंने दीक्षा ग्रहण कर ली। उनकी देखादेखी उनकी रानी पुष्पदत्ताने भी ब्रह्मिल नामकी आर्यिकाके पास आर्यिकाकी दीक्षा ले ली। धर्मका स्वरूप समझे बिदून देखादेखी आर्यिका तो वह होगई लेकिन उसके दिलसे अपने बड़प्पनका ध्यान नहीं गया और वह किसी आर्यिकाकी विनय नहीं करती थी। सुतरां अज्ञानके कारण इस योगकी हालतमें वह सुगंधदार चीजोंसे शृंगार किया करती थी और इस प्रकार धर्म विरुद्ध कार्य करती थी। आर्यिका ब्रह्मिलाने उसे समझाया कि धर्म विरुद्ध बातें पापकी कारण हैं। इनसे विषयोंकी इच्छा बढ़ती है। इसलिए यह काम नहीं करना चाहिए। इस बातको छिपानेके लिए उसने कह दिया कि वह सिंगार विंगार कुछ नहीं करती। और वह मायाचारसे रही। दिखावटमें आर्यिका रही। पर इस दिखावटी मायाचारीके कामोंमें वह बुरी गतियोंमें दुःख उठाती फिरी इसलिए अपनी ही भलाईके लिए हमें दिखावटी ढोंग और मायाचारमें नहीं फंसना चाहिए। यह तभी हो सक्ता है जब आप हमारी पूज्य मातायें धर्मके यथार्थ स्वरूपको और अपने कर्तव्यको समझ जाओ।

अब दूसरे शुभोपयोगके लिहाजसे दूसरे जीवों पर परोपकार करना। यदि आप पहिले मार्गसे अपना हित कर लेंगीं तो इस मार्गमें आप स्वभावसे ही जल्दी अगाड़ी बढ़ जांयगी। आप अपनी गोदसे ही परोपकारका कार्य प्रारंभ कर देंगी। अपनी सन्तानको इस योग्य बनाकर संसारका कल्याण करोगी कि जिससे वह आदर्श जीवन व्यतीत करे। फिर आप अपने घर हीसे इसका प्रचार करोगी। दिखावटी बातोंमें नहीं फंसोगी। धर्मके अनुसार चलोगी। जिसके फलमें आपके अड़ोसी पड़ोसी आपका अनुकरण करेंगे। ढोंग लापता होजायगा। असलियत आजायगी। बुरी प्रथाऐं अपने आप भाग जांयगीं। सुख शान्तिके मार्गपर धीरे २ सब चलने लगेंगे। और आपके इस जीवनसे वे उद्धार पुरुष व महिलाऐं खासकर विधुर और विधवाऐं अगाड़ी आऐंगे और अपना आत्मकल्याण करते हुए देशविदेश फिरकर धर्मका स्वरूप समझा सुखशांतिको फैला परोपकारको अपनाऐंगे। विधवा बहिनें जो अभी दिखावेमें फंसी घरोंमें पड़ी सड़ रहीं हैं, अपने अमूल्य

जीवनको नष्टकर रहीं हैं वे उत्साहसे खुशी २ श्राविकाश्रमोंमें जायगी और आकर अपने २ ग्रामोंमें पाठशालाएं खोल धर्मका प्रचार करेंगी, अपने आत्माका उद्धार करेंगी, वर्तमानकी तरह दिखावेमें व्यर्थ जीवन नष्ट नहीं करेंगी। सिंगार विंगार करनेको हेय समझेंगीं। और शुद्ध खद्दर पहनकर ग्राम २ में प्रचार करेंगी।

महिलाओ! जैनसमाजमेंसे पुरुषसमाज मुश्किल ही आपका हाथ बटानेको अगाड़ी आएगा क्योंकि वह आपहीके कारण (क्षमा कीजिए) अपने कर्तव्यको भूले हुए हैं—अपने जैनत्वको बिसारे हुए हैं। इसलिए विदुषी महिलाओ! वीरशासनका दिव्य प्रकाश संसारमें प्रगट करनेके लिये जिससे कि संसारके दुखबन्धन कट जांय आपको खुद एक ऐसा संघ (डेप्यूटेशन) तैयार करना होगा जिसके अंग उदासीन पर आत्मज्ञानासीन विविध लौकिक भाषाओं और विचारोंसे भिज्ञ महिलाएँ हों जो आपके ग्रामों २ में भ्रमणकर इस दिखावटके अज्ञानान्धकारको मेटकर मोक्षमार्गका रूप दर्शा सकें। और क्रमशः संसारको पुद्गलभारकी हानि भी बतला सकें। समाजके श्राविकाश्रम यदि इस कामके लिए अपने २ आश्रमसे दो दो निःस्वार्थ सेविकाऐं तैयार करसकें और समाजमें प्रचार कराते रहसकें तो ही वीरशासनका उद्धार होसकेगा। ध्यान रहे कि:—

"विद्या हमारी भी तबतक काममें कुछ आयेगी।
जबतक नारियोंको सुशिक्षा दी न जायगी॥"

एवम् भवतु।

महिलाहितैषी—कामताप्रसाद जैन।

सम्पादकके लक्षण।

पाठको! आजकल सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्रमें नित्य नूतन समाचारपत्र निकल रहे हैं यह समाज तथा देशकी उन्नतिके शुभ चिन्ह हैं। जबसे गांधीकी प्रबल आंधी चली है तमीसे लोगोंमें समाचारपत्रोंके देखनेकी रुचि पैदा हो गई है यह अच्छी बात है क्योंकि समाचारपत्र ही जनतामें जागृति करनेके एक मात्र साधन हैं। परन्तु समाचारपत्रोंको योग्य रीत्या चलानेके लिये अनुभवी—गम्भीर एवं विचारशील सम्पादकोंका होना आवश्यक है।

दैनिक व साप्ताहिक पत्रोंमें जो सम्पादकीय मुख्य लेख तथा मासिकपत्रोंमें जो सम्पादकीय नोट लिखता है उस प्रतिष्ठित सज्जन व्यक्तिको सम्पादक कहते हैं। साधारण जनताका ख्याल है कि सम्पादक महोदय प्रातःकालसे सायंकाल पर्यंत लेखादि लिखनेमें ही निमग्न रहते हैं, उन्हेंको बात करने तककी फुरसत नहीं मिलती तथा दैनिक समाचारपत्रोंके सम्पादकोंको तो खानेपीने तकका भी समय नहीं मिलता, परन्तु यथार्थमें बात ऐसी नहीं है। सुयोग्य संपादकगण सम्पादनका कार्य करते हुये देश तथा समाजकी सेवा कर सक्ते हैं और करते हैं तथा अन्य कार्योंके लिये भी उन्होंके पास पर्याप्त समय रहता है। युरोप देशमें लंडन शहरसे ही सैकड़ों प्रसिद्ध दैनिकपत्र निकलते हैं परन्तु उन पत्र सम्पादकोंको एक कालम तो क्या एक पंक्ति भी अपने समाचारपत्रोंके लिये नहीं लिखनी पड़ती परन्तु तब भी पत्र नियमित रूपसे चलते हैं। अनेक समाचारपत्रोंके सम्पादक अपने कार्या-

लयमें बैठकर सम्पादकीय टिप्पणियां अग्रलेख नहीं लिखते और न पत्रोंके लिये हेडिंग ही बनाते हैं परन्तु उनका इतना आदर होता है कि राज्यके प्रधान सचिव भी उनके साथ बैठकर अपनेको भाग्यशाली समझते हैं, प्रत्युत कई दशाओंमें सचिवगण सम्पादकोंसे भय खाते हैं। ऐसी कई मासिकपत्र पत्रिकायें हैं जिनमें सम्पादककी लेखनीसे निकला हुआ एक शब्द भी नहीं होता परन्तु सुचारुरूपसे वर्षोंतक चलती रहती हैं।

सम्पादक वही कहलाता है जो पत्रकी नीतिका संचालक तथा उसके लिये उत्तरदाता हो। पत्रमें सम्पादकीय अग्रलेख समाचारोंका क्रम शीर्षक तथा प्रेरित पत्रोंका चुनाव इनमेंसे भिन्न संपादकका कोई भी आवश्यक कार्य नहीं है। जैसे राष्ट्रपति न कचहरी करता है और न पहरे आदिका प्रबन्ध परन्तु वह देशकी संरक्षा व उन्नतिके लिये उत्तरदाता है उसी प्रकार संपादक भी अपने पत्रका उत्तरदाता है। यदि संपादक पत्रके लिये कोई लेख लिखे तो अत्युत्तम है पर यदि वह अपने पत्रके लिये लेख न लिखे तो कोई हानि नहीं है और न वह संपादकत्वसे दूर है अर्थात उसका संपादकत्व दूर नहीं होता। सामयिक समाचारपत्रोंके मुख्य संपादकमें निम्नलिखित गुणोंकी विशेष आवश्यकता है—

(१) मनुष्योंको नियममें रखकर कार्यमें लगानेकी योग्यता

(२) संसारका विस्तृत परिज्ञान।

(३) राजनैतिक स्थितिके पहचाननेकी शक्ति।

(४) समाजको परखनेके लिये अन्तर्दृष्टी।

टाइम्सके भूतपूर्व संपादक डिलेनका नाम इंगलेण्डके पत्र संपादकोंमें प्रसिद्ध है। डिलेनके समयमें टाइम्सकी अपूर्व उन्नति थी। स्वदेश तथा विदेशमें उसका आदर बहुत बढ़ गया था परंतु डिलेनने अपने पत्र टाइम्सके लिये वर्षोंतक एक पंक्ति भी नहीं लिखी। डिलेनका मुख्य कार्य पत्रकी नीति स्थिर रखना, अच्छे २ सुलेखकोंका सम्पादकीय विभागमें संग्रह करना और संवाददाताओंका ठीक स्थितिमें रखना था। देशके प्रधान सचिवतक उससे भय खाते थे। डिलेन उस वीर सेनापतिकी भांति था जो स्वयं एक भी गोली नहीं चलाता परन्तु अपनी आज्ञासे हर प्रकारकी सेनाको यथास्थान भेजकर लड़ाता था। डिलेन वर्तमान संपादकोंका आदर्श स्वरूप है। प्रधान सम्पादकोंके आधीन कार्य करनेवाले कई उपसम्पादक रहते हैं। एक सम्पादक राजनैतिक विषयोंको सम्भालता है तो दूसरा व्यापारिक विषयोंको, तीसरा साहित्यकी समालोचनाको व चौथा समाचार सम्पादक—समाचार संग्रहको अपना मुख्य कार्य समझता है। इस प्रकार संपादकका कार्य उस उस विषयके विद्वानोंमें बँटा रहता है। यदि मुख्य सम्पादकको सम्पादनका लेख संबन्धी कार्य भी करना पड़े तो पूर्वोक्त बताये हुये गुणोंके साथ ही निम्नलिखित गुणोंका होना भी आवश्यक है।

(१) अपने विषयका परिज्ञान।

(२) विशुद्ध और मनोरञ्जक लेखशैली।

(३) थोड़ेमें अधिक लिखनेकी योग्यता।

(४) सर्वसाधारणकी रुचिका परिज्ञान।

देवेन्द्रकुमार गाथा विशारद
इन्दौर निवासी।

धार्मिक मनुष्यना गुणो.

વહાલા વાંચક બંધુઓ !

મથાળાના મોટા અક્ષરોવાળું વાક્ય એટલે કે ધાર્મિક મનુષ્યમાં કેવા ગુણ હોવા જોઇએ, એ એક મહત્વનો વિષય છે. આપણે આજે તેજ વિષયમાં વિચાર કરવાનો છે. જે પુરૂષ બ્રહ્મને જાણવા ઇચ્છે છે એટલે કે આત્માને ઓળખવા ચાહે છે, તેનામાં નીચે લખેલા ગુણો ખાસ કરી હોવા જોઇએ. વળી જે પુરૂષ સમ્યક્ પૂર્વક જૈન ધર્મને ધારણ કરે છે, તેણે પણ તે ગુણો ક્રમે ક્રમે ધારણ કરી અંતે આત્માને પ્રત્યક્ષ કરી મુક્તિ નારીના કંથ બનવા પ્રયાસ કરવો જોઇએ. જે પુરૂષનામાં એ ગુણો હોતા નથી, તે પ્રભુની સામાન્ય ઉપાસનાનો અધિકારી પણ થઇ શકતો નથી, તો પછી પ્રભુ ભક્ત તો ક્યાંથીજ કહેવાય ?

માન ત્યાગ.

ધાર્મિક મનુષ્ય પોતાને તરણાથી પણ હલકો માને છે. તે કોઇના પણ સન્માનની ઇચ્છા રાખતો નથી. કોઇ મારે, ગાળો દે, નુકશાન કરે, તોપણ ક્રોધ કરતો નથી. વૃક્ષની માફક સહિષ્ણુ બની અપકાર કરનાર પર પણ ઉપકાર કરે છે. એટલે કે વૃક્ષ જેમ મારનાર પ્રહાર કરનારને ફળ ફુલ છાયા આપી સંતોષિત કરે છે, તેમજ ધાર્મિક મનુષ્યે પણ મારનાર પર ઉપકાર કરી તેને સંતોષિત કરવો જોઇએ એટલે કે પ્રેમ પૂર્વક બોલાવી સન્માન કરી સમાચાર પૂછી અન્નપાનની ખબર પૂછવી અને ધર્મનો ઉપદેશ કરવો. વળી હું ગુણવાન છું, ધનવાન છું, મને બીજા કેમ માન ન આપે, તે લોકો આવા છે, ને તેવા છે, એમ કહી તેમની નિંદા કરી પોતે માનની સ્પૃહા રાખવી નહિ. વળી સાદા અને સરળ વ્યવહારી બની બહુજ નમ્રતા ધારણ કરવી, એજ ધાર્મિક મનુષ્યનો પહેલો ગુણ છે.

દંભ ત્યાગ.

હું ધાર્મિક છું, વિદ્વાન છું, બીજાઓ શું સમજે, મારા જેવી સમજ કોનામાં છે ? કોઇને મારા જેવું કામ-ધર્મ આવડતું નથી વિગેરે અભિમાન યુક્ત દંભીક વચનો ધાર્મિક મનુષ્ય બોલી શકે નહિ, આવા દંભીકપણામાં ધર્મધ્યાન કરવું તે પ્રભુ પ્રત્યે દંભીકપણું બતાવી તેને છેતરવા બરાબર છે, બગલાના શિકારી ધ્યાન બરાબર છે. આત્મજ્ઞાનમાં પ્રવેશ કરનાર મુમુક્ષીએ આવા દંભીકપણાનો ત્યાગ કરવો જોઇએ. આ ધાર્મિક મનુષ્યનો બીજો ગુણ છે.

અહિંસા.

મન વાણી અને કાયાએ કરી બીજા પ્રાણીને પીડા આપવી—મારવું તે હિંસા છે. અને પીડા ન આપવી તે અહિંસા છે. બીજાને ઉપદેશ આપવામાં પણ અહિંસા વ્રતનો ભંગ થવા દેવો ન જોઇએ. બીજાને ઉપદેશ આપતાં તેને પીડા ન થાય તે જાળવી પ્રેમપૂર્વક આપવો જોઇએ. કોઇની લાગણી દુખાવી, પીડા કરી, ઉપદેશ આપવાથી કંઇ તે સુધરી જતો નથી. જેને પ્રભુ પ્રત્યે પ્રેમ ઉત્પન્ન થયો તે મન વચન અને કાયાએ કરી કોઇપણ પ્રાણીને પીડા આપી શકેજ નહિ. પોતાના જીવને બચાવવા ખાતર પણ બીજા જીવને નહિ મારવો જોઇએ. કોઇપણ જીવને દુઃખ થાય તેવું કર્ત્તવ્ય, તેવું વચન ખરો આત્મજ્ઞાની થવા દેજ નહિ. બીજાને માટે પોતે પ્રાણ આપે પણ પોતાને માટે બીજાને પ્રાણ ન આપવા દે તેજ પ્રભુને વહાલો છે. પ્રભુ કૃપા મેળવવા ઇચ્છનારે મન વચન અને કાયાએ કરી દરેક જાતની હિંસા, કોઇને દુઃખ થાય તેવું ભાષણ વર્ત્તન નિશ્ચય પૂર્વક છોડી દેવું જોઇએ, અહિંસાવ્રત એ સર્વ ધર્મનું પહેલામાં પહેલું વ્રત છે ને તે આ સ્થળે ધર્માત્મા માટે ત્રીજું પગથીઉં છે.

શાન્તિ.

બીજાઓને પીડા ન આપવી તે તો અહિંસા વ્રત છે, પણ પોતાના ઉપર આવેલી પીડા, દુઃખ, માર, ત્રાસ, ભય, સંકટ એ બધું ધીરજ પૂર્વક સહન કરવું, પણ તે જેના તરફથી થતું હોય

તેની સામે ન થવું તેજ ખરી શાન્તિ છે. ક્રોધને રોકવો અને અત્યાચાર ન થવા દેવો તેજ શાન્તિ. ભયની સામે ન થવું પણ આવેલા ભયને રોકવો એટલે સહન કરવો તેજ શાન્તિ.

કોઇના તરફથી અણધારી આફત આવી પડે તે વખતે ઉશ્કેરાઇ ન જતાં શાંત રહી આફતને સહન કરવી તેજ શાન્તિ. આ ધર્માત્માનો ચોથો ગુણ થયો.

આર્જવ.

આર્જવ એટલે સરલતા–નિર્મળતા. કાચ જેવું નિર્મલ હૃદય કરવું તેજ આર્જવ.

મનમાં કપટ રાખી મોઢેથી સારૂં લગાડવા પ્રયત્ન કરવો તે એક પ્રકારની કુટિલતા છે, તેનો ત્યાગ કરવો તેનું નામજ આર્જવ.

જેને બધી વસ્તુ બ્રહ્મ સ્વરૂપજ ભાસી છે તેને કુટિલતા કરવાની વસ્તુ કે પાત્ર રહેતુંજ નથી. સત્પુરૂષોને કપટમાત્ર સંભવેજ નહિ. સરળ સ્વભાવ એ ધર્માત્માની પાંચમી નિશાની છે.

આચાર્યોપાસના.

ચારિત્રવાન ગુરૂની સેવા પૂજા ભક્તિ કરી તેમને સંતુષ્ટ રાખવા તેનું નામજ આચાર્યોપાસના છે. પ્રભુના પંથમાં આગળ ધપવાની ઇચ્છા કરનારે જ્ઞાની અને ચારિત્રવાન પુરૂષને ગુરૂ તરિકે સ્વીકાર કરી તેના દ્વારાજ આત્મજ્ઞાનના ઉંડા પાઠો સમજવા.

શૌચ.

માટી અને જળના સંસર્ગથી જે શુદ્ધિ થાય છે, તે બાહ્ય શુદ્ધિ સિવાય આત્મજ્ઞાની આત્માને ઓળખી શકતો નથી.

સુખી તરફ મિત્રભાવ, દુઃખી તરફ દયાભાવ, પુણ્યવાન તરફ હર્ષભાવ અને પાપી તરફ તેને સુધારવાની ઉપેક્ષા રાખવાથીજ અંતરની શુદ્ધિ કહેવાય છે. અંતઃકરણમાંથી ચારે પ્રકારના કષાયોનો ત્યાગ કરવાથી, ઇન્દ્રિયોને નિયમિત બનાવવાથી અંતર પવિત્ર બને છે. અંતર પવિત્ર થયા સિવાય, શરીર શુદ્ધિ સિવાય પ્રભુભજનને લાયક થઇ શકાતું નથી અને પ્રભુભજનમાં દૃઢ થયા સિવાય આત્માને ઓળખી શકાતો નથી. શરીર અને મન બંન્ને પવિત્ર રાખી વિચારો શુદ્ધ રાખવા એ ધર્માત્માનો સાતમો ગુણ છે.

શૌર્ય.

સેંકડો વિઘ્નો આવે છતાં પ્રભુ પ્રાપ્તિના સાધનનો ત્યાગ ન કરતાં તેને હિંમત પૂર્વક વળગ્યા રહેવું તે શૌર્ય છે.

પાંચ ઇંદ્રિયોને અનુકૂળ સંજોગો હોવા છતાં ચારિત્ર ભ્રષ્ટ ન થવું તે શૌર્ય છે.

પરિષહો સહન કરવા, બાહ્ય અને આભ્યંતર તપ કરવાં, ઉપવાસાદિ વ્રત કરી શરીર કૃષ કરવું તે પણ શૌર્ય છે. હિંમતપૂર્વક કાર્ય કર્યા જવું તે શૌર્ય છે. પ્રભુ પ્રાપ્તિના પંથમાં શૌર્ય એ મહત્વનો ગુણ હોઇ તે આઠમો ગુણ છે.

આત્મનિગ્રહ.

મન, વાણી અને શરીરને વશ કરવાં, તેજ આત્મનિગ્રહ. જે જેને દેખાડે છે, તે તેનો આત્મા. તેનાં અંગ, મન, વચન અને કાયાને શાસ્ત્રની આજ્ઞા પ્રમાણે સ્થિર કરી તેઓને સન્માર્ગે લગાડવાં તેનું નામજ આત્મનિગ્રહ.

વિષય વૈરાગ્ય.

આ સંસારમાંના સર્વે સુખ વિષય લક્ષ્મી વિગેરે ક્ષણભંગુર છે એમ માની તેના દોષને અવલોકી તેના તરફ અરૂચિ ઉત્પન્ન કરવી તેજ વિષય વૈરાગ્ય. દરેક પ્રકારના વિષય ક્ષણ સ્થાયી અને દુઃખથી ભરેલા છે, માટે તેનો સમજુ માણસે પ્રતિજ્ઞા પૂર્વક ત્યાગ કરવો જોઇએ. આત્મજ્ઞાની બ્રહ્મચર્ય સિવાય ધારેલું સિદ્ધ કરી શકેજ નહિ. બ્રહ્મચર્ય એજ વિષય વૈરાગ્ય. આ ધર્માત્માનો દશમો ગુણ.

અનહંકાર.

ધન દેહ વિદ્યા કુળ જાતિ એ પૈકી કોઇનો કે સર્વનો પણ અભિમાન કરવો નહિ. તેમજ હું સર્વથી શ્રેષ્ઠ છું, એમ પણ દાવો કરવો નહિ. શેરને માથે સવાશેર હોય છેજ એમ માની સર્વને સમાન દ્રષ્ટિથી અવલોકવા એજ ધર્માત્માનું કર્તવ્ય છે.

દોષ દર્શન.

જન્મ મરણ અને વૃદ્ધપણું દરેકને માથે ભમ્યા કરે છે. આ જીવ ચોરાસી લાખ યોનિમાં ભમતો ભમતો આ મનુષ્ય જન્મમાં આવ્યો છે, તે તેનું અહોભાગ્ય છે.

આ જીવે ભાતભાતના જન્મોમાં ભાતભાતનાં પાપ કર્યાં હશે ને કર્યાં જાય છે. આ આત્મા કશું પણ લઇને આવ્યો નથી, ને તે લઇજવાનો પણ કશું નથી, જેથી સંસારભરમાં સર્વજ્ઞ-પ્રણિત ધર્મજ ફકત આ જીવને પાર ઉતારનારી નોકા છે, માટે ધર્માત્મા મનુષ્યે અનહંકારનો સ્વિકાર કરી તે ધર્મનેજ શરણે જવું જોઇએ.

અનાસકિત.

આ દેહ સ્ત્રી, પુત્ર, ધન, દોલત એ કંઈ આ આત્માને વળગેલાં નથી. તે ફકત આ અવતાર પુરતા મદદગાર સાક્ષીઓ છે, તે કોઇને મદદ કરતાં નથી પણ વ્યવહારમાં તેમજ ગણાય છે, જેથી બાહ્ય દ્રષ્ટિએ તે વળગેલાં છે. અંતરાત્માને તો કંઇ વળગતુંજ નથી.

આ સ્ત્રી પહેલાં પુરૂષ હશે. આ પુત્ર પહેલાં તે બાપ હશે, વળી તે પહેલાં બ્હેન હશે, તે પહેલાં છોકરી હશે, એ રીતે આ જન્મ મરણની પ્રથા ચાલી આવે છે. તેમાં કોઈ કોઇને વળગેલું છેજ નહિં. આ ધન આજે પુષ્કળ છે, ને કાલે વિલય થઈ જાય, વળી પાછું આવે ને જાય, એમ એ વીજળીના ચમકારાની માફક બદલાયા કરે છે. આ દેહ આજે સુખરૂપ છે, તો કાલે દુઃખરૂપ થાય, વળી સુખરૂપ થાય એવી રીતે ઘાંટકાયંત્રના કાંટાની માફક તે પણ ફર્યા કરે છે. સર્વે જીવ પોતપોતાના કર્માનુસાર ઉંચ નીચ ગાતમાં જન્મ લઇ થોડા વત્તા સુખને અનુભવે છે, તેને બહારની કાંઇ પણ પ્રવૃત્તિ તરફ લેવા દેવા નથી હોતું તેમ ન તો તે કોઇનો દબાયલો છે. આ જીવ સદાસર્વદા કર્મોથીજ ઢંકાએલો હોય છે, માટે તે કર્મોના પટલને દૂર કરવાજ આ બહારની વૃત્ત-પુત્ર, સ્ત્રી, ધનથી ધર્માત્મા મનુષ્યે મોહ ઘટાડવો જોઇએ.

સમભાવના (શમચિંતત્વ)

ધારેલું થાય તોપણ હર્ષ શોક કરવો નહિ. વહાલાં સ્વજનનો જન્મ, યા મરણ થાય પણ હર્ષ શોક કરવો નહિ. સુખ ~~આવે યા દુઃખ આવે~~ પણ હર્ષ શોક કરવો નહિ.

આ આત્માથી તે દૂરજ છે ને તે પ્રમાણે ફેરફાર થવાનો ને વસ્તુનો સ્વભાવ છે, એમ માની સમજુ મનુષ્યે હર્ષ શોકાદિનો ત્યાગ કરી શમ ચિંતત્વ ગુણ ધારણ કરવો જોઇએ.

અન્યયોગ ભકિત

પ્રભુના શરણ સિવાય મારી ગતિ નથી, એમ નિશ્ચય પૂર્વક ભાવના ભાવવી અને પ્રભુ ભકિતમાં દ્રઢ થવું. પ્રભુપર વિશ્વાસ બેસાડી એકજ પ્રભુ એકજ મંત્રમાં ચિત્તને પરોવવું એટલે કે એકજ પ્રભુપર નિશ્ચય પૂર્વક વારિ જવુ (સર્વસ્વ અર્પણ કરવું) પ્રભુ પ્રત્યે પૂર્ણ પ્રેમ પ્રગટયા વિના પ્રભુના માર્ગને પહોંચી શકાતું નથી એમ સમજી ધર્માત્મા મનુષ્યે તેના તરફ અટૂટ શ્રદ્ધા—અટૂટ ભકિત દાખવવી.

વિવિકત સેવા.

ભય રહિત બનવું, જંગલ નદી તીર કે મંદિરના એકાંત સ્થળે વસવા અનુરાગી થવું.

જયાં મોટામાં મોટો ભય હોય ત્યાં નિર્ભયતા પૂર્વક ગમન કરવું અને ધ્યાન લગાવી બેસવું ને આત્મચિંતવન કરી પરમપદને મેળવવા પ્રયાસ કરવો તેજ વિવિકત સેવા છે.

શરીરપરથી મમત્વ છોડી ભયવાળી જગ્યાએ કે એકાંત સ્થળે મનને સ્થિર કરી પ્રભુ ભકિતમાં દ્રઢ બની તેના ગુણનું ચિંતવન કરવું તેજ વિવિકત સેવા. ધર્માત્મા મનુષ્યે યાદ રાખવું કે શરીરપરથી મોહ છોડયા સિવાય આત્માને ઓળખી શકાતો નથી.

દુષ્ટ ?ન ત્યાગ.

દુષ્ટ એટલે વિષયી, પ્રભુભકિત રહિત, ચારિત્રહીન, નાસ્તક, પ્રભુને ન માનનારો, એવાના સંસર્ગથી દૂર રહેવું, પણ તેમને સન્માર્ગે વાળવા ઉપદેશ અવશ્ય કરવો. ધર્માત્મા મનુષ્યે પોતાના

દરેક બળથી તેઓને ઉદ્ધારવા પ્રયાસ કરવો. ધાર્મિક કાર્યમાં ડખલ ન કરે માટેજ તેનો ત્યાગ કરવો.

આત્મજ્ઞાન નિષ્ઠા.

આત્મજ્ઞાનથી આત્મા ઓળખી શકાય છે. એ નિશ્ચય પૂર્વક માની આત્મજ્ઞાનમાં પ્રવેશ કરવો ને પ્રવેશ કર્યા પછી કરોડો પરિષહો આવે તેને છોડવું નહિ. તો અવશ્ય કાર્ય સિદ્ધ થાય છે, માટે સમજુ મનુષ્યે હંમેશ આત્માના શોધનમાં ઉદ્યોગી બનવું.

તત્વજ્ઞાન.

ધર્મના સિદ્ધાન્તોના અર્થનો વિચાર કરવો તેનું નામજ તત્વજ્ઞાન. દરેક ફરમાનો, દરેક સૂત્રોને અર્થ પૂર્વક વિચારવાં તેનું નામજ તત્વજ્ઞાન. એ તત્વજ્ઞાન થયા પછી જ્ઞાનમાં પ્રવેશ કર્યા પછીજ આત્મા ઓળખી શકાય છે.અને આત્માને ઓળખ્યો તેજ પરમપદ, તેજ મુક્તિ, તેજ સુખનું સામ્રાજ્ય.

ઉપસંહાર.

જે મનુષ્ય આ સિદ્ધાંતોમાંથી સારને ગ્રહણ કરી અયોગ્ય ક્રિયાઓનો ત્યાગ કરી ઉત્તમ ચારિત્રવાન બનશે તેજ જ્ઞાન અને ભક્તિના રહસ્યને સમજી ઉત્તમ માર્ગને સંપાદન કરશે.

જેઓ પોતાના સ્વરૂપને ઓળખવા ઇચ્છતા હોય, સર્વ સુખ દુઃખની વૃત્તિ શાંત કરવા ઇચ્છતા હોય, પરમાનંદની સ્થિતિ પ્રાપ્ત કરવા ઇચ્છતા હોય તેમણે ઉપરના ગુણો અવશ્ય ધારણ કરવા જોઇએ. જેનામાં આ ગુણ હોય છે, તેજ ધાર્મિક મનુષ્ય ગણાય છે.

આ સંસારમાં રહી ધર્મસાધન પૂર્વક આત્માને ઓળખી પરમાત્માના સ્વરૂપને પિછાનવા સુચના માત્ર છે, પરન્તુ ઉત્તમ જ્ઞાનને પ્રાપ્ત કરી મોક્ષશીલાપર બિરાજવાની ઇચ્છાવાળા મુમુક્ષુ જનોને તો આ દુઃખરૂપી અને ક્ષણમાં વિલય થનારા સંસારનો ત્યાગ કરી યોગ લીધા સિવાય સિદ્ધિ નથી. સંસારમાં તેજ નર બહાદૂર કે જેણે વિષયાદિ કષાયોને જીત્યા છે.

આ લખાણ શ્રીભગવદ્‌ગીતા તથા જૈન દશ લક્ષણ ધર્મ અને સોલહ કારણ ધર્મના વર્ણન ઉપરથી ઉપજાવી કાઢયું છે અને તે સર્વે ધર્મવાળા મુમુક્ષુજનોને લાભકારી નિવડશે, એમ લેખકને સંપૂર્ણ આશા છે.

આ સ્થળે હું ગીતા પરિચયની પ્રકાશક કંપનીનો આભાર માનવાની રજા લઇશ કે જેના વાંચન પછીજ મારા અજ્ઞાનપડળ ખુલી હું આત્મજ્ઞાનના રસ્તા તરફ વળ્યો છું અને મને પ્રાણપ્રિય એવા જૈન દર્શનમાંના દશલક્ષણાદિ ધર્મના વર્ણનને વધારે ખુબીથી વાંચવા પણ ત્યાર પછીજ લાગ્યો છું. હું સંપૂર્ણ આશા રાખું છું કે—આ ઉપરથી સમજુજનો જ્ઞાનની કાંઇક ઝાંખી કરી તત્પ્રમાણે વર્તન બનાવી અધ્યાત્મના ઉંડા જ્ઞાનમાં પ્રવેશ કરશે, અને આત્માને ઓળખી પરમપદને મેળવવા ભાગ્યશાળી બનશે, ॐ શાંતિ ॐ શ્રી પરમાત્મને નમઃ

લખનાર હું છું આત્મજ્ઞાનીઓનો સેવક—

મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ—કાણીસા.

प्रेम

तूने मुझे भुलाकर बरबाद कर दिया है ।
तेरेलिए तरसता हरदम मेरा जिया है ॥
तू तत्व है निराला तेरा स्वरूप भला ।
तेरे सरिस न कोई जगमें निरख लिया है ॥
तू सूर्यमें समाया तू चाँदमें समाया ।
दरिया पहाड़में भी तुझको निरख लिया है ॥
जिसने तुझे भुलाया उसने न सौख्य पाया ।
तेरे बिना ये जीवन योंही गमा दिया है ॥
जो तेरे आसरेपर रहता जहांन अंदर ।
उसने सभी जगतको अपना बना लिया है ॥
इससे पुकार मेरी सुन प्रेम कर न देरी ।
मेरे हृदय समाजा गोरेन कह दिया है ॥

प्रेम—सेवक—

पं० गोरेलाल पंचरत्न—जबेरा ।

करमसद (खेडा) में प्राचीन दर्शनीय ग्रंथ।

हमने ता० ३ व ४ जुलाईको करमसदके ग्रंथोंका दर्शन किया व उनकी सम्हाल की। यहां एक भट्टारक रत्नकीर्ति हो गए हैं उनका एक संदूक था उसकी सूची नहीं बनी हुई थी उसकी सूची बनाई गई जिसका कुछ वर्णन नीचे है-

ग्रंथ नं० वेष्टन नं० १

१-श्री जंबूद्वीपपण्णत्ति प्राकृत पद्मनंदि कृत संधि १३ लि० सं० १४६० योगिनीपुरे सुलतान मुहम्मद शाह राज्ये पत्रे २९४

मंगलाचरण

देवासुरिंद महिदे दसद्धरूवूण (चार) कम्म परिहीणे। केवलणाणा लोए सद्भमुव एसदे अरुहे।

अंतप्रशस्ति-

विउधवइमउइ मदिण गणकर सलिल सुधोय चारुपय कमलं। वर पउमणंदि णमियं वीर जिणिंद णमंसामि।

यह हमें तो दिगम्बरी मालूम होता है। इसकी प्राकृत सुगम है। इसका प्रकाश अवश्य होना योग्य है। यहां वाले कहते हैं कि सेठ माणकचंदजीने इसकी नकल करा ली थी। यदि बम्बईमें नकल हो तो उसको सबसे प्रथम "माणिकचंद ग्रंथमाला" में प्रगट करना चाहिये। यदि नकल न हो तो नकल कराना चाहिये।

वेष्टन नं० १

ग्रंथ नं० २ पांडवपुराण श्री भूषण कृत प० २१० लि० स० १७४१ बहादुरपुरे

३ यशोधरचरित्र सोमकीर्ति प० ४७

४ शांतिनाथपुराण सं० श्रीभूषण प० ११७

नोट-श्रीभूषणके ग्रन्थ बिलकुल अप्रगट हैं। इनको प्रगट करना चाहिये।

५ लोकस्थिति सं० प० १०

६ पुराणिक श्लोक सं० प० १९

७ मल्लिनाथ चरित्र सकलकीर्ति प० ९०

वेष्टन न० ३ में व न० ८ से २१ तक संस्कृत पूजाके ग्रन्थ हैं जिनमें न० १९ में विमान शुद्धि पूजा प० ११ व न० १८ में त्रेपनक्रिया पूजा व ८४ जाति जैमाल है व न० १८ में बाराव्रत उद्यापन पद्मनंदिकृत प० १३ हैं।

वेष्टन न० ४-५-६-८ में गुजराती ग्रन्थ हैं जिनमें जानने योग्य हैं—

न० २२ चंद्रप्रभ पार्श्वनाथ शांतिनाथरास

२६ पंचपरमेष्टीरास व हरिवंशरास प० २९९

२४ महावीररास व कर्मविपाकरास जिनदास

२६ धर्मपरीक्षारास सुमतिकीर्ति प० ११४

२७ सगर आख्यान प० १४

२९ आदिनाथरास जिनदास प० २१

३१ सीताहरण आख्यान जयसागरकृत

४० श्रावकाचार गुजराती प० ११२

श्रीपाल कृत बड़ा गुटका (प्रगट योग्य) वेष्टन न० ७ में हिन्दी मराठी ग्रन्थ हैं उनमें न० ३६ आत्मविलास हिन्दीका बहुत उपयोगी प्रगट योग्य है। प० १६३ सम्पूर्ण है

न० ३७में **धर्मामृत तत्वसार मराठी भाषा** गुणकीर्तिकृत प० ९२ (प्रगट योग्य)

वेष्टन न० ९ अनेक यंत्र व चित्र पोथी है-

नं० ४१ रमणीक चित्र १९ विचित्र रंगके २४ तीर्थंकरोंके शरीर वर्णके २४ चित्र, ९ अन्य आहारदान, संसार वृक्ष आदि दर्शनीय।

नं० ४२ रविवारकथा गुजराती सचित्र बहुत ही बढ़िया चित्रकला बताई गई है। इसमें ९९ चित्र अपूर्व हैं। यह सं० १८१६ में अंजन ग्राममें सेठ वृषभनाथकी स्त्री चांदबाईने लिखवाए।

४३ श्रुतस्कंध यंत्र रंगीन

४४ ८४ लाख उत्तरगुण चित्र

४५ पद्मावती यंत्र

४६ योगवृद्धि यंत्र गोमटसार

४७ ६४ मंत्र यंत्र

४८ एकासी यंत्र

४९ ज्वालामालिनी यंत्र

५० क्षेत्रपाल यंत्र

वेष्टन नं० १०

५१ जिनसेन सहस्रनाम सुवर्णसे लिखा हुआ, आगरामें औरंगशाहके राज्यमें अग्रवाल मीतल गोत्री सेठ पर्वतने ब्रह्मचारी हर्षसागरके उपदेशसे सं० १७१६ में लिखवाया, प० २१। इसमें ६६ पीढ़ियोंकी वंशावली दी है (दर्शनीय है।)

५२ **यशोधरचरित्र** सोमकीर्ति सं० पत्र ६१ इसमें सोनेकी कलमसे बने बहुत ही बढ़िया १८ चित्र दर्शनीय है। इसको हूमड ज्ञातीय प्रतापसिंहके पुत्रोंने लिखाया।

संवत अंत्रेकैकपंचयुक्ते ऐसा दिया है सो समझमें नहीं आया।

वे० नं० ११ में अजैन, १२ में फुटकर पत्रे नं० १३ से नं० १९ तकमें पूजा-पाठके गुटके हैं।

यहांके पंचायती शास्त्र भंडारके लिखित शास्त्र भंडारको लिखा, उसमें जानने योग्य वे० नं० १ में ग्रन्थ नं० १ **आत्मानुशासनकी संस्कृत वृत्ति प्रभाचंद्र** कृत प० ६९ लि० सं० १८८२ है (यह अवश्य प्रगट योग्य है) व वे० नं० २ में न० ४ श्रावकाचार श्रीपालकृत गुजराती श्लोक ४०, ४५ पत्रे १८८, वे० नं० ३ में ग्रं० ५ यशोधर चरित्र गुजराती देवेन्द्रकृत प० ९९, वे० नं० ४ में ग्रन्थ नं० ६ प्रद्युम्नचरित्र देवेन्द्र प० ३१ है।

जो ग्रंथ मंगाना हो उसके लिये यहांके सेठ झवेरदास रणछोडदासको लिखना चाहिये।

नोट—यहां भ० रत्नकीर्तिका एक संदूक था उसमें ३ संस्कृत ग्रंथ थे उसमें **प्रतिबोध-चिंतामणि** श्रावकाचार श्रीभूषणकृत पत्रे १८५ लि० सं० १६६९का अप्रगट है। यह भी प्रगट होने योग्य है।

सीतलप्रसादजी ब्रह्मचारी।

स्वर्गीय कवि—

हीराचंद अमोलिक फलटनकर कृत—

हिंदी सुरस पद

जो वर्षोंसे नहीं मिलता था वही फिर छपकर तैयार होगया। इसमें उत्तमोत्तम **१०० पदोंका संग्रह** है। उत्तम कागज, बम्बईकी उत्तम छपाई पृ. ४८ व मूल्य छह आने। इन पदोंकी ख्याति सर्वमान्य है इसलिये अवश्य मंगाइए। कविका चित्र भी इसमें है।

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-सूरत।

आरोग्य शिक्षा।

वर्षा ऋतुमें बहुधा हैजा आदि रोग हुआ करते हैं, इस लिये खान-पान और रहन-सहनमें बहुत सावधानी करनी चाहिये। सब प्रकारके रोगोंसे बचनेके लिये नीचे लिखी बातोंपर ध्यान देना बहुत आवश्यक है-

१ नियत समयपर भोजन करना चाहिये।

२-काममें लगनेके पहिले प्रातःकाल थोड़ासा हलका भोजन करलेना चाहिये। जब कि हैज़ा रोग फैला हो तो खाली पेट रहना हानिकारी है।

३-दोपहरके समय उत्तम गर्म भोजन करना चाहिये। इसी प्रकार सायंकालको ६ बजेके लगभग करना चाहिये।

४-भोजन करनेके पीछे कुछ देर विश्राम करना चाहिये।

५-भोजनको अच्छी तरह चबा२ कर निगलना चाहिये। भोजन करनेमें जल्दी न करनी चाहिये।

६-भोजनके बर्तन तांबे या पीतलके हों।

७-इस बातका ध्यान रक्खो कि खानेपीनेकी किसी चीजपर मक्खियां न बैठने पावें।

८-कच्चे या गले सडे फल या तरकारी मत खाओ, और सब प्रकारके निकम्मे भोजनका परित्याग करना उचित है।

९-बिना उबाला, बिना छाना हुआ दुध कदापि न पिओ। जल भी छानकर पीना चाहिये।

१०-जहां तक सम्भव हो सादा भोजन करो। थोड़े मसालेसे लाभ होता है, परंतु अधिक मसालेसे आमाशयमें हानि पहुंचती है। लाल मिर्च अधिक खानेसे परहेज करो।

११-बासी और गरिष्ट चीजोंके खानेसे परहेज करो।

१२-यदि सम्भव हो तो भोजनकी वस्तु अदल बदल कर खाना चहिये।

१३-वर्षा ऋतुमें दही मठा भी न खाना चाहिये।

१४-संसारमें कम भोजन करनेवालोंकी अपेक्षा अधिक भोजन करनेवाले बहुत मरते हैं। सबको उचित है कि अधिक न खांय इससे स्वास्थ्यको हानि पहुंचती है।

१४-भोजनके समय थोड़ा २ जल पीना चाहिये। भोजन करनेके आध घंटे पीछे पानी पीना चाहिये।

१६-सबेरे बिना कुछ खाये खाली पेटपर पानी न पीना चाहिये।

१७-बिना भूखके बारबार भोजन न करना चाहिये।

१८-भोजनमें शरीरको पुष्ट करनेवाली वस्तु हों, इस बातका विचार रक्खो। केवल स्वादके लिये ही कोई चीज न खाओ।

प्यारे पाठको! यह सब बात स्मरण रक्खो और इन्हीके अनुसार चलो तब तुम सदैव निरोग रहोगे।

नये २ ग्रंथ मगाइये।

प्राचीन जैन इतिहास प्रथम भाग ॥।)

जैन बालबोधक चौथा भाग-इसमें ६७ विषय हैं। पृ० ३७२ होनेपर भी मू० सिर्फ १=) है। पाठशाला व स्वाध्यायोपयोगी है।

आत्मसिद्धि-अंग्रेजी, संस्कृत, गुजराती ॥।)

जिनेंद्रभजनभंडार (७१ भजन) ।-)

पता-**मैनेजर, दिगम्बर जैन पु०-सूरत।**

उदासीनाश्रम-इन्दौरसे इस चातुर्माासमें ८ ब्रह्मचारी कलकत्ता, सांगोद, सारोला, खातेगांव आदि स्थानों पर उपदेशार्थ भेजे गये हैं।

धर्मशिक्षाका प्रबंध-महाराष्ट्रकी जैन बोर्डिंगमें फरज्यात हुआ है।

हमीरगढ-में अभी मेवाड़ खेराड़ प्रा० दि० जैन खं० सभाका अधिवेशन हुआ था जिसमें उपयोगी ३० प्रस्ताव पास हुए थे। मुख्य २ ये हैं-शास्त्रानुसार आहार विहारका प्रचार करना, प्रान्तकी स्कूलोंमें एक घंटा धर्मशिक्षा देनेका प्रबंध करना, विवाह जैन विधिसे हो, कन्याविक्रय साबित होजाय तो उनके यहां संमिलित न होना, पं० धन्नालालजी केकड़ीको 'खंडेलवालकुलभूषणका' पद दिया गया, आतिशबाजी, वेश्यानृत्य बंद, विवाह नुकताके खर्च कम करनेके नियम बनावें, उदैपुरमें पुष्प चढ़ानेका झगड़ा चल रहा है उसको निवटानेके लिये दोनों दलोंने लिखित प्रतिज्ञापत्र दिया व फैसला पंचको सौंपा गया, तीर्थक्षेत्र कमेटीको यथाशक्ति सहायता देते रहना आदि।

कलकत्ता-में भी श्रावण सुदी ४को सर सेठ हुकमचंदजीके सभापतित्वमें शोकसभा हुई थी जिसमें शोक व सहानुभूतिका प्रस्ताव रखते हुए सर सेठ हुकमचंदजीने लाला जम्बूप्रसादजीके अपूर्व गुणोंका हृदयस्पर्शी वर्णन किया था।

इसी प्रकार स्याद्वाद महाविद्यालय काशी, उदयपुर विद्यालय, सागर विद्यालय, बर्द्धमान मंडल इन्दौर, मोरेना विद्यालय, खंडवा, बड़नगर, दमोह, सिलसी, वेहट आदि अनेक स्थानों पर लालाजीके स्वर्गवाससे शोक सभाएं हुई थीं।

सिद्धवरकूट-क्षेत्र पर अभी बेरिस्टर जुगमंदिरलालजी जज इन्दौर हाईकोर्ट यात्रार्थ पधारे थे। आपने प्रबंधसे प्रसन्न होकर १०१) पूजनके स्थायी फंडमें दिये जिसकी आमदनीसे कार्तिकमें मेलेके समय पूजन हुआ करेगी।

सांगली-में प्रसिद्ध व्यापारी सावंतप्पा भाउ आरवाड़ेके १६ वर्षके युवान पुत्रका देहांत होगया। आपके पीछे २०००) दान किया गया है।

पानीपत-में पूज्य ब्र० सीतलप्रसादजीने चातुर्मास किया है जिससे वहां अच्छी धर्मवर्षा हो रही है। प्रवचनसार, श्रावकाचार, व राजवार्तिकजीका कथन चल रहा है। यहां पं० कबूलसिंहजी, पं० रामजीदासजी, पं० अरहदासजी, बाबू जै भगवान बी० ए०, रा० बा० सेठ लखमीचंदजी धर्म चर्चाके बड़े प्रेमी हैं।

खंडेलवाल जैन हितेच्छु-मैनेजरका प्रबंध न होनेसे बंद हुआ है।

देहलीमें-डॉ० बख्तावरसिंहजी जैन एम० ए० (अमेरिका) एल० आर० सी० पी० एन्ड एस० आदि पदवियोंके धारी विलायतसे पधारे हैं। आपने ५ वर्ष अमेरिका व २ वर्ष इंग्लैंडमें शिक्षा प्राप्त की है व वहां असि० सर्जनका भी कार्य किया है। आपने सदर बाजार डिप्टीगंजके पास अपना औषधालय खोला है।

उदैपुर विद्यालय-को उनके अधिष्ठाता ब्र० चांदमलजीको अभी मन्दसौर, दाहोद, फतियाबाद, उज्जैन, बम्बई आदिसे करीब १००) की सहायता मिली है। अभी आप नसीराबाद उदासीनाश्रममें ठहरे हुए हैं।

नाम संस्कारमें दान–सुसारीके सेठ रोडमल मेघराजजीके नेमीचंदजीने अपने पुत्रका नाम संस्करण जैन विधिसे कराया व सभा करके २९० दान अपने कर्मचारियोंको व ... संस्थाओंको दान किया

मुक्तागिरी–का खापर्डेका एक मुकदमा कोर्टने खारिज किया है जिसकी वे अपील करनेवाले हैं।

दशलाक्षण पर्व–में उपदेश देनेके लिये स्या० महाविद्यालय काशीसे उच्च कक्षाके विद्यार्थी व धर्माध्यापक कैलाशचंद्र कहींसे मांग आने पर जा सकेंगे क्योंकि विद्यालयमें पर्वकी छुट्टी रहती है।

महात्माजीको जैन ग्रंथ भेजे गये–जैनमित्र कार्यालयकी ओरसे महात्मा गांधीजीको येरोडा (पूना) जेलके सुप्रिन्टेन्डेन्ट मार्फत ब्र० शीतलप्रसादजी कृत समाधिशतक टीका, समयसार टीका, इष्टोपदेश टीका, आत्मधर्म, आत्मानंदका सोपान, स्वसमरानंद व अनुभवानंद तथा बेरिस्टर चम्पतरायजी कृत असहमतसंगम ये ८ पुस्तकें भेजी गई थीं जो सुप्रिन्टेन्डेटने स्वीकार करके वे पुस्तकें महात्माजीको दी हैं ऐसा पत्र हमारे पास आगया है।

लाभ लिया–दानवीर सर सेठ हुकमचंदजीके आयु० औषधालय इंदौरका गत ३ महीनोंमें ३२७४ नये व कुल ११३६० रोगियोंने लाभ लिया था। इनमें २९ बीमारोंकी विजली द्वारा चिकित्सा कीगई तथा २० ओपरेशन हुए थे। इसकी १३ शाखायें भी खुल चुकी हैं।

ગુજરાત દિ૦ જૈન યુવક મંડલ–મુંબાઇની તરફથી અષાડ સુદ ૧૩ ને સભા થઇ નાગપુરમાં રાષ્ટ્રીય વાવટા સત્યાગ્રહ યુદ્ધમાં જેલ જનાર ગુજરાતના બે વીરો શેઠ છોટાલાલ ગાંધી અને ભાઇ ઠાકોરલાલને અભિનંદન આપવાનો ઠરાવ થયો હતો

હીરાબાગ ધર્મશાલા–નો જૂન માસમાં ૬૮૯ અને જુલાઇમાં ૭૩૪ જૈન અજૈન મુસાફરોએ લાભ લીધો હતો, તથા દવાખાનાનો ૮૫૦ અને ૭૦૨ નવા રોગીયોએ લાભ લીધો હતો.

पर्युषणपर्वके पवित्र दिनोंके लिये
पवित्र द्रव्योंसे तैयार किया हुआ व
प्रशंसा पात्र
दशांग धुप
अवश्य मगाइये! अवश्य मगाइये!!
फी रतल २-८-० ढाइ रुपये।
सरैया ब्रधर्स जैनी–सूरत।

अगरबत्ती
अगरकी २) रतल
चंदनकी १) "
अगरकी सलीपर ४) रतल
चंदनकी सलीपर २)

पवित्र
काश्मीरी केशर
२॥) तोला

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस खपाटिया चकला,–सूरतमें मूलचंद किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" आफिस, चंदावाड़ी–सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।